बूंटीप्रचार ग्रन्थ की औषधियों का सूचीपत्र लिख्यते.

इति यंत्र क्रिया विधि

इति श्री वृन्दावन श्री अंगमणिकोष सूचीपत्र समाप्त

अथ बूटीप्रचार की बूटियों के चित्रों का सूचीपत्र

अथ वूटीप्रचार की वूटियों के चित्रों का सूचीपत्र

॥ श्री ॥

बूंटीप्रचार वैद्यक

सेवती ।

गर्मी से माथा दूखता हो जिसकी दवा

गर्मी से माथा दूखे तो सेवती का फूल तथा अतर सूंघे तो वन्द होवे सेवती का गुलकन्द जलके साथ पीवे तथा सेवती के फूल तोला १ इलायची रत्ती ४ मिरच कारी नग सात ७ मिसरी तोला घोटकर पीवें तो दाहा गर्मी मिटे माथा की व्याधा मिटे आराम होवे ।

गुलाब

वाय गर्मी से माथे में कूलन चलतीहोवै जिसकी दवा

वाय गर्मी सें माथा दूखता होवै तो चैती गुलाब का अतर सूंघे तो बन्द होवै। गोपीचन्दन और गुलाबजल ये दोनों माथे पर लगाने से नकसीर बन्द होवै। गुलाब जल से आख धोवै तो आखनकी गर्मी जाय गुलाब का गुलकन्द जल के साथ पीवै तो दाहा गर्मी मिटै आराम होवै।

भरिया फूटा फोडा की दवा

भरिया फूटा फोडा होवै तो मोगरा का पान पीस के घृत में मिलाके गरमकरके बांधे आराम होवै तथा मोगरा का पान तोला ४

गूगल मासा ६ पीसकर टिकिया बनाके घृत तोला २ कटोरी में डालकर आंच पर चढ़ावै

मोगरा

टिकिया जल जावेजब निकाले पीछे घृत में मोम मासा ६डालकर मल्हम बनावै पीछे उसको लगावेआराम होवै। मोगरा का अतर

सूंघे तो मगज तर होवें।

चमेली।

दाहा गर्मी की दवा या मुंह में छाला होवे तो वह भी मिटै।

दाहा गर्मी या माथा की कूलन या मुंह में छाला होवे तो चमेली का फूल तथा अतर सूंघे कूलन मिटै चमेली का पान तोला १

मिरच कारी नग ७ इलायची नग ३ मिसरी मासा ६ घोटकर पीवै तौ आराम होवै । चमेली का पान उवाल के कुल्ला करै आराम होवे मुह का छाला मिटै ।

ढाउदी ।

बेवची की दवाई।

बेवची होवै तो दाउदीका रस लेवै उसमें अजमोद जला के मिलावै घोटके बेवची के ऊपर लगावै बेवची जावे दिन ७ तथा ९ लगावै तो आराम होवै। दाउदी के अतर तथा फूलसूघने से पीनस का रोग होवै सही।
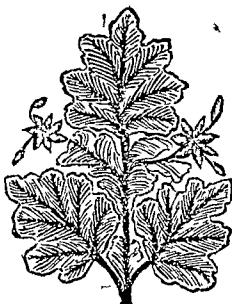
जेर वाजकी दवा।

जेरवाज होवै तो पीले फूल की दाउदी के पान पीस के छाछ में उवाले पीछे जेरवाज ऊपर बाधे दिन ३ तथा ५ में आराम होवै परन्तु नहीं मिटै तो नावेका पान तोले १ दाउदी के पान तोले २ उवाल के बांधे दिन ३ में आराम होवे सही।

पानड़ी

माथा की कूलन मिटै सरसाम का रोग जाय

सरसमा का रोग होवै तो पानड़ी का अतर सूघे या जायफल घिसके विसमें पानडी का अतर मिलावै पीछे नाक में दो वार या चार वार सूघे और माथे के लगावे दिन में दो या

तीन वार लगावे और गरम कर के लगावै तो आराम होवे ।

पानडी

रजान
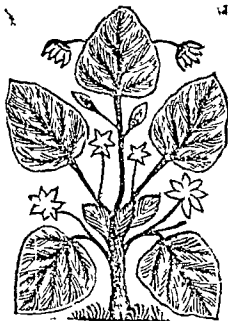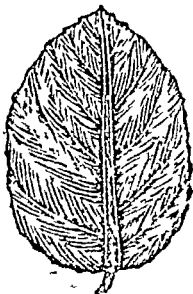
तनप्या धातकी दवाई या सादी प्रमेह की दवा

तनप्याधातजातीहोवेयाप्रमेहहोवे तोरजानका पान या कच्ची फली तोले ३ कारी मिरच नग ७

इलायची नग३ मिसरी तोला१ घोटकर पीवै तो तनष्या धात वद होवै तथा प्रमेह मिटै दिन ७ तथा ९ पीवै तो आराम होवै परहेज तेल खटाई न खाय।

हजारी गुल

मधुरा की दवाई या हिचकी की दवा

मधुरा या हिचकी चलती होवै तो गुलहजारे का फूल या पान का रस निकालकर उसमें रुद्राक्ष घिसके जिह्वा कें लगावें दिन में ३ वार लगावें तौ मधुरा रोग जावै और फूल और हल्दी कूटके चिलम में पीवें तौ हिचकीका रोग जावे आरामहोवे तेलखटाई न खावे ।

वेर

कोलास्थितमज्ज कलकस्तु पीतो वाप्युदकेनच । अचिराद्धिनिहन्त्येष प्रयोगो भस्मक नृणा ॥

अर्थ

बेर की गुठली की मीगी पानी में पीसकर पीवै तौ भस्म रोग नाशे ।

पगरखी या पगकी पगथली जलन करती होवै जिसकी दवा

स्त्री के पगर जाता हो या पगकी तली ज-

लन करती होवे तो बेरका पान तोला३मिरच नग ९ इलाची नग ३ मिसरी तोला १ घोट के पीवे तो पगरथ में पगर चर्षे बेर के पान पीस के पानी में डालके झाग उठाके झाग पगकी पगथली के लगावे दिन पाच खावे या लगावेतो आराम होवे तेल खटाई न खावे

सीता फल

सीताफल

कीड़ा की दवाई या अमल खाये के उतार की दवा

जिसके कीडा पडा होवै तो सीताफल के पत्ता पीस के लगावै आराम होवै तथा सीता फलके पान तोला ५ घोटके पिलावै नशामात्र उतरै अमल खाया कू पिवावै तो अमल उतरै आराम होवै फल का मिजाज सरद बादी है दाहा गर्मी को मेटै वीज के तेल से जूआं मरतीहैं लगानेसे,और गज जाती है माथाकी

बलबीज

गर्मीकी दवा तथा फोडा की दवा

गर्मीहोवै तो बलबीजकापानतोले५पीसकर या

मसल के उसमें खाड बनारसी तोला दो मिलाकर खावे निरनेही फर ऊपर से मूगकी

बलबीज

दाल रोटी अलोनी खावे मिरच खटाई का परहेज और कुछ नहीं खावे।

घृत खाय और गर्मी निकली होय तो आराम होवे फोडा के ऊपर पत्ता पीसकर लगावे तो

फोडा को तुरत ही अच्छा करै परन्तु पथ्य न बिगडे परहेज रक्खे ।

अमरूद

बंगभस्मकी या दस्त बंद करने की दवा

वग भस्म करना होवे तो रांगकू सोध तेल या छाछ मे पीछे पतरा कूटके बारीक कतरके

और अमरूद के पत्ता पीसके २ रोटी बनावे और थपे हुए कंडे पर अमरूद के पिसे भये पत्ता धरे उस पर रांग के टुकड़ा छोटे २ धरे उन पर पत्तों की रोटी धरे पीछे उस के चारों तरफ कंडे लगावे वग भस्म होवे निर्बलताकू मेटे तथा अमरूद कच्चा तोड़के पीस के मिश्री मिलाके खावे दस्त बंद होवें ।

अरंड

दाहा गर्मी की दवा या पेट के लोहरफी या पेट की वादी की दवा

दाहा गर्मी होवे तो एरंड काकडी निरने खावे आराम होवे या मिश्री लपेट के या निमक लगाके खावे तो दाहा गर्मी मिटे कच्ची अरंड काकडी तोला ४ चावले के पीसे उस

मे १ मासे निमक डाले पीछे अनार का या जामन का सिरका १ तोला डालके छानके पीवे तो गुलम फीयो या लोहार पेटका रोग
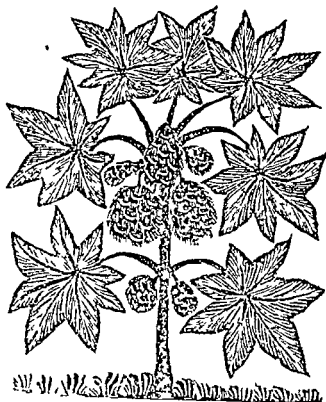
जावे आराम होवे सही ।
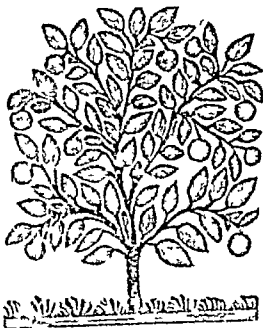
नीबू

पित्तकी दवा भूंगा भस्म की दवाई
प्रत्येक रोगपर चले

पित्तकी दाहा या वमन होती होवे तो नीबू
नग १ तथा २ लेके फाक करके उसमे निमक

कारी मिरच पीसके भरै दूसरे में चूना रत्ती १ और खाड भरै पीछे गरम कर के चूसे पहिले चूने खाड को, पीछे निमक मिरचको चूसे या नीबू को सिकजवी कर पोदीना का अरक डालके पीवै आराम होवै नीबू के पान या नीबू में मूगा भस्म होवै खाने को।

अनार

दम और खेन की दवा फौलाद भस्म होवे कान्तीसार होवे

दम, खेन, स्वास, कास, पित्त होवै तो अनार का अरक मिरच या सक्कर के साथ पीवै दाहा मिटै या अनार के छिलके का अरक पानी डालके करै २ तोला उसमें निमक डाल के गर्म करै या न करै उसे पीवै आराम होवै अनार के रस में फौलाद का चूर घोटै अनार के पत्ता पीस फौलाद लुगदी के बीच में धरै आंच में फूंके पुट४१ देवै भस्म हो कान्तीसार होवै दम, खेन, स्वास, कास जावै ।

नारंगी

पित्तकी दाहा या मुख छाया या छाजण की दवाई

पित्त की दाहा गर्मी या मुख छाया होवै

तो नारंगी का अरक तोला ४ मिश्री तोला १ इलायची नग ३ मिलाय के पीवै तो आराम होवै या निमक मिर्च डालके पीवै पित्त कू

नारंगी

मारे दाहाकू मेटे नारगी के छिलका के तेल

से मुख की छाया जावे छाजनवाले की छाजण जावे आराम होवे ॥

फोड़ा की या सोमल (संखिया) हरताल भस्म करने की दवा

फोड़ा पर पीपर की छाल घिसकर लगावे

या दूधका फाया लगावै बालतोड पर भी लगावै तो आराम होवै तथा सखिया या हरताल भस्म करनी होवै तो सौमल या हरताल को आक के दूध में भिगोवै पीछे पीपरकी छाल की राख एक हांडी मे दाव दाव के भरै जब आधी भर जावै तब सखिया या हरताल उस में धरै ऊपर फिर वही राख दाव दावके भरै कि पूरी हांडी भर जावै फिर चूल्हे पर चढ़ाके पहर ४ आच देवै भस्म होवै दम,खेन,स्वास कास, ताप, तिजारीवाले को देवै आराम होवै तथा पीपर की कौंपल में रूपरस भस्म होवै २१ पुट में सरवला (मिट्टी की सैया) का सपुट कर के।

ओंगा

सोमल (संखिया) भस्म करने की दूसरी क्रिया

लाल डाढी के ओंगा की राख हांडीमें दाब
ाव के ऊपर नीचे और बीच में सोमल धरके
गंचदे भस्म होवे तथा ओंगाकी राख पानी
घोलकर पानी छानके कढाईमें भर के चूल्हे

पर चढ़ावै पानी जलजावै जब उतारले खा
जो कढ़ाई में रहजाय उसे निकालले दम
खेन, स्वांसवाले कू पान मे दे आराम हो
ओंगा की दातन करै तो वचन सिद्धि हो
महिना करै तथा ओंगा कू शनिवार कू सा
काल स्नान करायके जब तिल, रोरी, चन
नोते धूप दे के उस में १ कलाया वांधे अ
रविवारको सूर्योदय पाहिले उखाड लावै त
तिजारीवाले के वह कलाया बाधे आराम ह
तथा ओंगा की जड की राख दूध में पीवे
संतान होवे ओंगा के वीजों की खीर कर
खाय भूक नहीं लगे दिन २१।

अपामारग (सफेद ओंगा)

सोमल (सखिया भस्म) करने की तीसरी क्रिया

सफेद ओंगा की राख उपर नीचे दाव ९

क भरे बीच में ४ तोला सखिया धरै चूल्हेपर चढाय ४ पहर आच द भस्म हो तथा इसकी जड़ पीस के दातों में लगावें तो वीर्य बंधन हो तथा जड पीस राखे तो लाभ हो इसकी जड उबाल के पानी पीवें तो गर्भ रहे तथा जड़ हाथ पाव के चुपडे तो मुख का खून गि-

रना बंद होवै तथा इस की जड़ पि

के स्तनों में लगावे तो दूध उतरै तथा जड़का तिलक करै तो बसीकरण होवै तथा इस की और बहेडे की जड नोतकर दोनों को मिला कर वैरी के घर पर डारे तो ऊजड होवै तथा नोंती हुई जड़का रुई में बाती कर लड़का को दिखावै तो हाजगत होवै ॥

अजीठ या नरवाज की दवाई
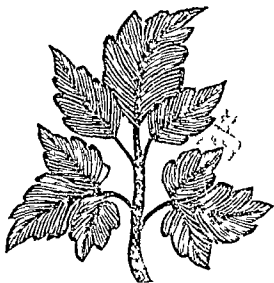
अद्रीठ या जेरवाज होवें तो मिरचाई की बेल का पत्ता पीस के विष में थोडीसी मिश्री मिलाके बांधे अदीट रोग जावें अथवा मिरचाई की जड गरमकर उस में गोमूत्र डालकर जेरवाज के बांधे तो गाठ घेंट पके नहीं तथा कंठमाला रोग को भी इससे आराम होवें ।
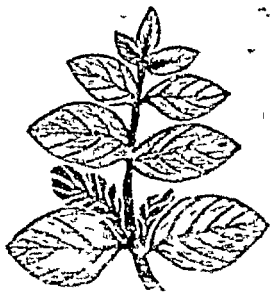
देम खेन स्वास कांस की दवाई

बोंडी आंधी जाडो के पत्ते पेड सहित ज-लावे उस में काच का निमक तोला ३ सोंचर निमक तोला ३ सांभर निमक तोला ३ ह-लदी तोला ३ अजमायन तोला १० डालके पकावे पीछे गरम पानी तोला ४ में यह दवा १॥ मासे डालकर पीवे दिन ५ तथा ७ पीवें दम खेन स्वास कास जावे आराम होवे ख-टाई तेल न खाय।

ताव सीत और खासी की दवाई

लींटी पीपर सहतके साथ ले अथवा रात्रि कूं पीपर १ कुलिया में भिजोवे प्रभात कूं पी-परों में निमक लगाके आच पै सेक के खाय ताव जाय भूक लगे पीपर पाक भी बनता है
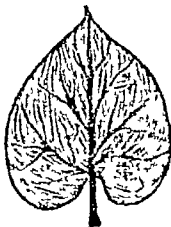
सीतवाले कूं देवे तो सीत जाय पीपर छोटी
की जड कू पीपरामूल कहते है जापे में स्त्री
को दी जाती है अगनी मंद को भी दी जाती
है तथा और भी बहुतसी दवाइयों में मिलाई
जाती है देने की विधि न्यारी २ है पीपर छोटी
के पत्ता का रस नि[illegible] नि[illegible]
पीवे तो खांसी जावे द[illegible] वटा[illegible]

बवासीर दस्त और दाहा गर्मी की दवा

विल्वपत्र के पके हुए फलकी गिरी तोले २ मिश्री तोला १ मिरच काली नग ७ इलायची रत्ती ४ घोटकर पीवै तो बवासीर खूनी जाय

तथा बेल की सिकंजबी या बेल का मुरब्बा खाय तो दस्त बंद होवे और दाहा गर्मी को मेटै आराम होवे परहेज से रहे खटाई तेल गुड़ हींग बेंगन नहीं खाय।

सहतूत

बायगर्मी और आतशक की दवा

बायगर्मी होवे तो सहतूत का अरक पीवे और सहतूत खाय तो बायगर्म मिटे यदि जेर बाज (फोड़ा की गाठ) होवे तो सहतून के पत्ता चोंट के उनसे आधी गेंहू की भुसी डाल- कर उस को उबाल के बांधे तो आराम होवे और सहतूत की नरम कोंपल या फलको पीस के मैनसिल की ६ मासे की डेली कोंपल या फलकी लुगदी में धर पीछे संपुटकर डाग्नी

सहतूत

में फूंके जब भस्म होवै जिसको ताब तिजारी चौथैया आवता हो उसको आधे चावल भर गुड में मिलाकर देय तो आराम होवै ॥

गर्मीसे मुखमें छाले पड़े हों और मृगांग भस्म करनेकी दवा

आतशक के कारण मुख में छाले पड़ गये

होंय तो कचनार के पत्ता या छाल और कत्था
माशे ३ फिटकिरी माशा १ इन सब दवाइयों
को पानी में डालकर औटावे और उस पानी
में कुल्ला करे तो आराम होवे तथा रूपरस
बनावे तो कचनार की छाल कूटकर सरबला
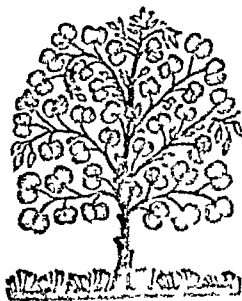
मे धरै उस के बीच में रुपया धरै पुट २१ देवै तो चांदी भस्म होवै तथा कचनार का फूल या छाल पीसकर उसमें गधक मासे ६ मिला-कर बीच में मोहोर धरै इसी तरह पुट दे पि-छली आंच कचनार का फूल निमक पीस के लुगदी में सुवरण धरै तो भस्म होवै।

कीड़े मरें अथवा पंदाल के डोरा की नासिक
सुघावे तो कीड़ा नाक के छिद्र द्वारा बाह

मूढापाती

निकल पड़े और आराम होवे । खटाई, तेल,
गुड़ नहीं खावे पथ्य दार मूंग मोंठ की खावे ।

प्रमेह या नकसीर चलती हो या आंख दूखती हों उसकी दवा

महँदी पुरानी तोला २ मिश्री तोला १ इलायची रत्ती ४ घोटकें पीवै तौ प्रमेह जाय दिन ५ या ७ पीवै तथा नकसीरवाले के महदी पानी में पीसके पैर के तलवों और तालू में

महँदी

लगावे नकसीर बंद हो यदि आंख दूखती हों तो महँदी की पोटली बनावे उस में लोध फिटकिरी कपूर सुपारी काठा थोड़ी २ ये सब दवाई पोटली में डाले और पानी में भिगो-कर पोटली को आंखों से लगावे या पोटली का पानी आंख में डाले तो सुरखी फटे आंख को आराम होवे ।

रतबाय की या अवरख मारण की दवा

कलारी के पत्तों का रस निकाल गरम कर के रतबाय पै लगावै तो रतबाय जावै यदि अवरख मारना होवै तो कलारी के पत्तों का रस निकाल कर उस में मोडल गरमकर के वुझावै १०९ वार गरम कर के वुझावै फिर २१ वार गऊ मूत्र में वुझावै या २१ वार त्रिफला के पानी में बुझावै या २१ वार कांजी में वु-झावै या जल भागरा के रस में भिजोवै पीछे कलारी के रस में वुझाकें खरल में कूटकर वारीक करें पीछे कैई वूंटियों का पुट दे तो सहस्त्र भस्म हो।

भिंडी

सुजाक की या धात जा ... ट
भिंडी कच्ची ... के ... भिं
की जड तो

दिन सात, तो आराम होवे भिंडीके फूल तोला ३ पीसकर पाव भर गाय की छाछ में मिला के पीवै तो आराम होवे।

सत्यानाशी

आंखों की सुर्खी गर्मी आतशक और कृच्छ्र मूत्र की दवा

सत्यानाशी का दूध आंखों में डाले तो सुर्खी

भिंडी

सुजाक की या धात जाती हो उसकी दवा

भिंडी कच्ची मिश्री के माथ खाय या भिंडी की जड़ तोले ४ मिश्री तोला १ कारी मिरच रत्ती ८ इलायची पूर्वी रत्ती ८ घोट के पीवे

दिन सात, तो आराम होवे भिंडीके फूल तोला ३ पीसकर पाव भर गाय की छाछ में मिला के पीवे तो आराम होवे।

सत्यानाशी

आंखों की सुर्खी गर्मी आतशक और कृच्छ्र मूत्र की दवा

सत्यानाशी का दूध आंखों में डाले तो सुर्खी

मिटे यदि गर्मीवाले के चटें पड़ गई हों तो चटों पर भी सत्यानाशी का दूध लगावे आराम होवे तथा सत्यानाशी की जड़ तोला १ घोटकर निरने ही ७ दिन या ९ दिन पीवे निमक, लालमिरच, खटाई, तेल, गुड़, बैंगन उड़द, दूध न खाय दाल मूंग की या मोठ की खावे आराम होवे गर्मी जाय सही । कृच्छ्र मूत्रवाले को सत्यानाशी का रस निकाल के कढ़ाई में भर उस में कलमीशोरा तोला १ डालकर आंच दे सोरा पक जावे और रस जल जावे तब उतार ले शोरा पका भया मासा १॥ मिश्री तोला १ बिजौर का अरक २ तोले में मिश्री और शोरा डाले और चार तोला पानी उस में डालकर पिलावे अर्थात् पानी

ऊपर से पिलावै तो कृच्छ्र मूत्र दोष मिटै आ-
राम हो परहेज रक्खै।

कारीनगदी

कोढकी भगदर की और पारा भस्म करने की दवा

कोढ़ या भगंदर होवै तो कारी नगदी तोले
१ घोट के निरनेही पीवै तो आराम होवै को-
ढ भगदर रोग जावै कारी नगदी में पारा

घोट के संपुट करे गड्ढे में धर के अरणे छाणों की आंच देवें जब भस्म होवे कारी नगवी गिरनार के पहाड़ पै पैदा होती है और आबू के पहाड पर भी ढूंडने से मिलती है श्यामा तुलसी सरीके पत्ता और डाडीकारी होती है उस के पेड़ के नीचे की जगह ऐसी चिकनी होती है जैसी तेलियाकंद की होती है यह भाग्य से मिलती है ।

माथे के दर्द की और खुजली की दवा

सर्दी से या गर्मी से माथा दूखता होवे तो चंदन का तेल और कपूर माथे के लगावे तो आराम होवे चंदनके तेल में नींबू कारस मिलाके शरीर पर मालिश करे तो खुजली और

चन्दन

फुसी रफै होती हैं चंदन में बहुत गुण हैं कितने ही इलाजों में लीया जावै है चंदन के पत्तों में मूगा भस्म होता है निर्बल मनुष्यको देवै तो बल आवै खटाई, तेल वगैरा न खाय

सेम

दाद और वेवची की दवाई मूंगा या
बंग भस्म होय

दाद होवे तो सेम के पत्तों का रस और मि-
श्री घिसके लगावे तो आराम हो मूंगा भस्म
करे तो यह भी होवे यदि बंग भस्म करना

होय तौ सेम के पान पीसकर पारा मासे ६ राग तोला १ सामिल मिलाकर कूटै जब बारीक होजाय तव सैम के पिसे हुये पत्तों की लुगदी में धर के सरवला सपुट कर के गढ़ेला में धर के आच दे तो भस्म हो कमताकत कोउत्तम वेद्यसे मात्राआदि पूछकेंदे आरामहो

सुजाक प्रमेह और धातु पुष्ट की दवा

सुजाक प्रमेह या धात जाती होवै तो सो-

नफुली के पत्ता ४ तोले जेठी मद माशे ३ काली मिरच नग ७ इलायची नग ३ इन सब को पीसकर मिश्री तोला १ मिलाकर पीवे तो आराम होय ७ दिन तथा ९ पीवें तेल, खटाई, बेंगन, लाल मिरच न खावें परहेज राखे तो आराम होवे ।

भांगरो पित पापड़ो

पित्त ज्वर और गलगंड की दवा

पित्त ज्वर और गले में गाठ पड गई हो तो भाग्योपित्त पापड़ो माशे ६ कारी मिरच नग १ लौंग नग ७ तीनों को पीसकर गरम पानी के साथ फक्की लेवै तथा घोट छान गरमकर निमक की भानना दे पीछे पीवे दिन ३ पित्त ज्वर जाय भाग्यो पित्तपापडा पीस के गरम कर के गलगड के वाधे तो गलगड जावै तेल खटाई न खावे सो आराम होवे ।

कच्छ रोग (जलोदर) की दवा

कच्छ रोग की बीमारी होवे तो मिरचाई धेल का पान या बीज हरड़ सनाय प्रत्येक ३ माशे इन सबको पीसके फंकी गरम पानी के साथ ७ दिन १५ तथा २१ दिन लेवे तो कच्छ रोग मिटै तापतिल्ली भी मिटे साधारण, २ या ३ दस्त हों खाने को मूगकी दाल रोटी साग मेथी और चौलाई का साग साग पर हेज न बिगाड़े खटाई तेल न खावे रोग जाय आराम होवे।

धात बंद की या स्त्री के पगर चलता हो उसकी दवा

धात जाती हो या स्त्री के पगर चलता हो

तो जासूद के फूल तोला १ मिरच काली नग ७ जेठीमद माशा १ मिश्री तोला १ घोटकर पीवै धात वद होवे दिन ७ तथा ९ पीवै तो आराम होवे जासूद के पत्ता तोले ३ इला-यची नग ३ मोचरस माशा १।। मिसरी तोला

जासूद

१ काली मिरच नग ५ इन सबको घोटकर

पीवे परहेज न बिगाड़े तो तुरन्त ही आराम होवे दिन ७ पीवे पगर धर्म ।

मन्दाग्नि तिजारी और बालतोडकी दवा मिरच पड़

लाल मिरच तोले २ सोंठ मासे २ निमक

माशे ६ इनको घोट छानकर तसला या कढ़ाई में डालकर छौंकदे जब पानी आधा जल जाय तब उतारै पीछे उस के साथ रोटी खावै तो अग्नी प्रबल होवै वादी शीत कूं मारै मिरच लाल पीस के अथवा मसलके पानी में भिजोवै पीछे कपड़े में धरकर तिजारी अथवा चेलांज्वर चढा हो तो उस समय दो या तीन बूंद रोगी के कानमें निचोडे तो आराम होवै।

गर्मी से दांतों में से रुधिर गिरता हो या चबका चलते हों और सिंगरफ भस्म

वज्रदंती के पान तथा जड़ लेकर कत्था के पानी में उबाले और उसी पानी से कुरला करै तो दांतों से खून गिरना और चबका चलना

पीवे परहेज न विगाडे तो तुरन्त ही आराम होवे दिन ७ पीवे पगर थमें ।

मन्दाग्नि तिजारी और वालतोड़की दवा मिरच पेड़

लाल मिरच तोले २ सौंठ माशे २ निमक

माशे ६ इनको घोट छानकर तसला या कढ़ाई मे डालकर छोकदे जब पानी आधा जल जाय तब उतारै पीछे उस के साथ रोटी खावै तो अग्नी प्रबल होवै वादी शीत कूं मारे मिरच लाल पीस के अथवा मसलके पानी में भिजोवै पीछे कपड़े में धरकर तिजारी अथवा वेलाज्वर चढ़ा हो तो उस समय दो या तीन बूद रोगी के कानमें निचोडे तो आराम होवे।

गर्मी से दांतो में से रुधिर गिरता हो या चबका चलते हों और सिंगरफ भस्म

बज्रदती के पान तथा जड़ लेकर कत्था के पानी में उबाले और उसी पानी से कुरला करै तो दातों से खून गिरना और चबका चलना

बंद होवे तथा अस्मानी फूल की वज़्रदंती के पत्तों का रस निकाले पीछे सिगरफ तोला ४ घोटे दिन नौ तक और रस देता जाय पीछे सरवला संपुट कर के कपड़मिट्टी करे पीछे ५

वज़्रदंती
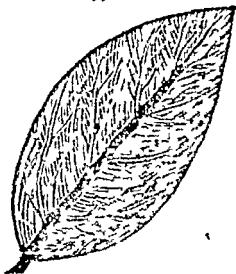
सेर छाणां की आच दे तो भस्म हो अर्द्धांग पर चले विधि देने की उत्तम वैद्य से पूछले ।

शिवलिंगी

मृतवत्सा दोष की दवाई

जिस स्त्री के बालक न जीते हों या बालक न होते हों उन के लिये शिवलिंगी के बीज नग २७ लेय और पीपल की जटा माशे ६

शिवलिंगी
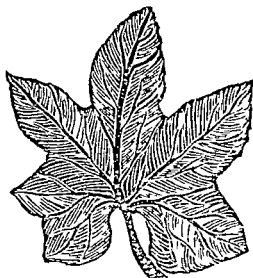
गजकशर माश ६ दोनों को पीसकर तीन टि-
किया बनावे शिवलिंगी के बीज सावत राखे
९ बीज के ३ भाग करे स्त्री ऋतु होने के पीछे
शुद्ध स्नान करे तब कारी कपिला गाय के दूध
की खीर करे उस मे गाय का घिरत और मि-
सरी डाले फिर बीज और दवा की टिकिया
डाले और ऋतुदान लेकर उस पर यह खीर
खाय तो बालक होवे महादेव जी का पूजन
करे घीका दीपक धरे ६ मास सोमवार का
व्रत करे ॥

सीतवाय और अग्नी मंद की दवा

रतालू सवासेर छील कतर के उबाले
और उबाल के आटे की भाति उसे मसले
पीछे घिरत आधसेर कढ़ाई में चढावे उस में

आटा सेकै फिर उस मे उबले हुये रताळू डा-
लकर इस तरकीब से सेकें कि बदामी रग हो
जाय फिर उस में सक्कर या गुड दो सेर डालै

रताळू
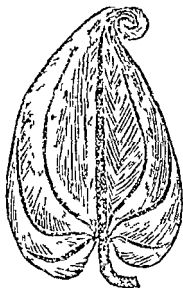
ओर बादाम सोठ माश ९ कालीमिरच माशे
९ लोग माशे ९ तज माशे पीपरलीटी माशे ९

इन सबको कूटकर किवाम में डालके लड्डू बांधे पीछे उनको खाय तो सीतवाय और अग्नीमद को आराम हो।

अडूसा

खांसी म्न और स्वांस की दवा
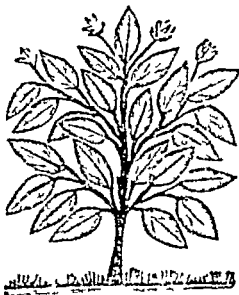
अडूसे के पत्तों का अरक निकालके उस में

थोड़ासा निमक डालके गरम कर पीवै तो खासी जाय अथवा रस मे अवरक या कान्ती सार डालकर खाय तो कास, खेन, स्वास, दमा ये सब दूर हो अडूसे का सत्त भी निकलता है उस में शहत मिलाकर खावे परहेज न बिगाडे खटाई तेल न खाय आरामहोवै

प्रमेह या नल भरने से पेट बढ़गया हो और रूपरस भस्म करने की दवा

वड़ का पान नरम कोंपल तोडके तेल चुपड के सेक के पेट से वाधे तो बादला या नल भर गया हो तो आराम हो प्रमेह होवै तो १ या २ बतासे में वड़ का दूध नित्य भर के ५ या ७ दिन खाय खटाई, तेल न खावै आरा-

वड
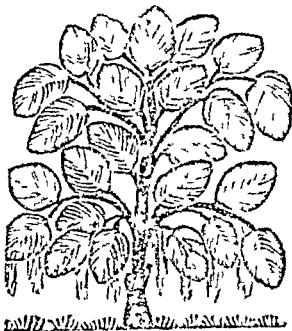
म हो यदि रूपरस करना होय तो चांदी को १०१ वार गाय के मूत्र में बुझावे पीछे बड के नरम नरम पत्तों को पीस के उस में बड का दूध भी मिलावे उस की लुगदी बनाके और

उस में चांदी धर के सरबला में धर ५ सेर कडा की आंच देवै इसी भाति पुट २१ देवै तो भस्म होवै।

बादला (एक रोग सर्दी से बालकों के पेट में होता है) और खांसीकी दवा

सिताव का पान रत्ती ४ पीसकर बालक की

माके दूध में अथवा नागरवेल के पान के रस में दे तो बालक को आराम हो यदि तरुण आदमी को खासी होय तो सिताब का पान तोला १ मिरच कारी तोला १ लोंग माशे ६ थोड़ासा निमक डालके पीसकर मटर प्रमाण गोली बनावै और एक परभात और एक गोली संध्या के समय खाय तो ५ या ७ दिन खाय और खटाई, तेल न खायतो आराम होवै

ताकत आने और सुजाक ज[illegible] दवा

रसपिंडी ढाईसेर उवाल के आटे की भांति उसे मसले पीछे दो सेर घी में ऐसा सेके कि बदामी रंग हो जावे फिर एक सेर मैदा वी में डालकर सेकै फिर उस में गुड़ या शक्कर दो सेर खोआ दूध का एक सेर बादाम, पिस्ता
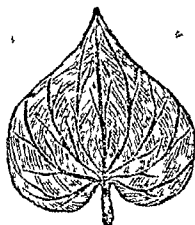
रसपिंडी

इलायची डालकर जमाय के कतली करै या लड्डू बाधे २१ दिन खाय सुजाक जावे ताकत आवै रसपिंडी एक किस्म का कंद है जमीन में गांठसी होती है ।

बादला या सर्दी का दर्द बालक के हो जिसकी और खेन की दवा

सिताव का पान रत्ती २ पीसकर वच्चा की

माके दूध में अथवा नागरवेल के पान के रस में दे तो वालक को आराम हो यदि तरुण आदमी को खांसी होय तो सिताव का पान तोला १ मिरच कारी तोला १ लोंग माशे ६ थोड़ासा निमक डालके पीसकर मटर प्रमाण गोली वनावे और एक परभात और एक गो-ली संध्या के समय खाय तो ५ या ७ दिन खाय और खटाई,तेल न खायतो आराम होवे ताकत आने और सुजाक ज[illegible] । दवा

रसपिंडी ढाईसेर उवाल के आटे की भांति उसे मसले पीछे दो सेर घी में ऐसा सेके कि बदामी रंग हो जावे फिर एक सेर मेदा घी में डालकर सेके फिर उस में गुड़ या शक्कर दो सेर खोआ दूध का एक सेर वादाम,पिस्ता

रसपिंडी

इलायची डालकर जमाय के कतली करे या लड्डू बांधे २१ दिन खाय सुजाक जावे ताकत आवै रसपिंडी एक किस्म का कंद है जमीन में गाठसी होती है।

वादला या सर्दी का दर्द बालक के हो जिसकी और खेन की दवा

सिताब का पान रत्ती २ पीसकर बच्चा की

सिताब पेड़

माके दूध में या अदरक के रस में या सोंट का पानी कर के घुटी देवे मासे ६ के अदाज देवे तो बालक को आराम हो तथा सिताब का पान तोले १ लोंग माशे ६ कारी मिरच

माशे ६ अकरकरा माशे ६ ये सब पीस के मटर प्रमाण गोली बांधे पीछे १ फजर १ साम को खाय तो खेन रोग जाय सही ।

सीसम

स्त्री के रक्त प्रदर और श्वेत प्रदर की दवा

सीसम का फूल तोले २ तथा पत्ते तोले ३

सिताव पेड

माके दूध में या अदरक के रस में या सोंट का पानी कर के घुटी देवे मासे ६ के अंदाज देवे तो बालक को आराम हो तथा सिताप का पान तोले १ लौंग माशे ६ कारी मिरच

बंधेज तिजारी, ताव, फोड़ा और बालक के सरदी हो जिसकी दवा

धतूरे के दो चार पत्ता लेकर तेल में चुपड़ कर बालक के पेट से अग्नि पै सेकके बांध तो बालक को आराम हो फोडा फुसी के बांध तो वह भी अच्छा हो धतूर का फल चीर के उस मे लौंग भरे पीछे उस पर पानी का भीगा कपड़ा लपेटकर गरम गरम भूभल में धरै जब भुन जावे तब पीसक उडद या काली मिरच के बराबर गोली बाधकर एक गोली सुबह और एक शाम को खावे तो चौथै बंध ताप, तिजारी या और पारीवाले को देवै तो उस को भी आराम हो परन्तु परहेज न बिगडे और खटाई, तेल, गुड नहीं खाय ।

कारी मिरच नग ११ इलायची नग ३ मिश्री तोला १॥ डालकर घोटके पीवे तो रक्त प्रदर और स्वेत प्रदर को आराम होवे तथा स्त्री के धात जाती हो वह भी बंद होवे दिन ५ तथा ७ पीवे खटाई, तेल, गुड़, बैंगन, लाल मि-रच न खावे ।

गोली बनावै पीछे १ गोली नित्य नियम से खाय परहेज राखै ताकत आवै यदि चोट लगी हो या मुर्र गई हो तो महुवा, तिल, नारियल की गिरी, हलदी, अजमायन इन सब को लेकर कूटके तेल में सिजाके बांधे तो चोट की कसक और मुर्र ५ या ७ दिन बाधने से आराम हो।
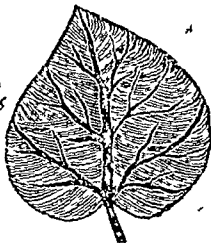
महुवा

मन्दाग्नी कमताकतचोट और मुर्रकी दवा

महुवा सेर १ तिल सेर १ मिरच काली तोला ९ इन तीनों चीजों को कूट पीसकर पीछे गुड पुराना सेर २ उस में मिलाकर २१

गोली बनावै पीछे १ गोली नित्य नियम से खाय परहेज राखै ताकत आवै यदि चोट लगी हो या मुर्र गई हो तो महुवा, तिल,नारियल की गिरी, हलदी, अजमायन इन सब को लेकर कूटके तेल में सिजाके बाधे तो चोट की कसक और मुर्र ५ या ७ दिन बांधने से आराम हो।

मेहंदी
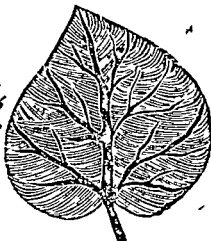
रूपरस भस्म करने की दवा

रुपैया कोटा या वूदी का पुराना ले अथवा चादी का पत्तर मोटा लेकर २१ बार गरम कर के गोमूत्र में बुझावें पीछे उसे छाछ तथा मठामें बुझावै पीछे मेढ़ादूदी का पञ्चाग लेकर कूटकर सरवला में धरे फिर उस के बीच में रुपया अथवा चादी धरे उस पर फिर दवाई धर के सरवला का सपुट दे आच कंडा ५ सेर की देवे आंच १० देवे पीछे १ सेर कडा की देवें फिर आधसेर कंडा की देवें भस्म हो सर-घला की कपड़ मिट्टी नहीं करे इसके खाने की विधि न्यारी २ है उत्तम वैद्य से पूछके खाय ।

सरसाम और माथे की फूटन की दवा

सफेद फूल की सहदेई के पत्ता उबालकर

बाधे तो माथे की कूलन को आराम हो दिन ३ बाधे और सहदेई के पत्ता पीसकर उसका रस निकाले फिर उस में कड़ई तूंबी की गिरी और गुजरात की तमाखू डालकर दिन भर

सहदेई

घोटे रस सूखने पर जो सुंघनी बनै उसे मिर्गी

या सिरसामवाले को सुंघावे तो आराम हो और माथे के कीड़ा भी जावें।

अमल छुड़ाने सुस्ती और जवानी की बुरी आदतों से नस कमजोर होगई हों उन की दवा

सफेद कनेर की जड़ तोले २० लेवे उसे १० सेर दूध में डालकर औटावे फिर उस दूधको जमाकर विलोय लेवे पीछे उस में से माखन घी निकाले सुस्तीवाले को पान में लगाकर खवावे और अमलवाले को खोया १ रत्ती या २ रत्ती देवे तो अमल छूटे और जिस की नस कमजोर हो उसको माखन में खवावे तथा उसी की मालिश करे ऊपर से नागर

कनेर

वेल के पान अर्थात् रुई का नामा कदाचित इसके ऊपर से फुसी हो जांय तौ धोया भया घी लगावे खटाई तेल न खाय तो आराम हो

हरताल और सिंगरफ मारन की दवा

पीरे फूल की कनेर का दूध लेकर उस में

हरताल या सिंगरफ २ तोला पांच दिन तक घोटे पीछे टिकिया बनावे और कनेर के पत्तों को पीसकर एक लुगदी बनावे फिर उस लुगदी में टिकिया को धरे फिर इमली के छि-

कनेर पीली

लका की राख कर के एक हांडी में भरे जब
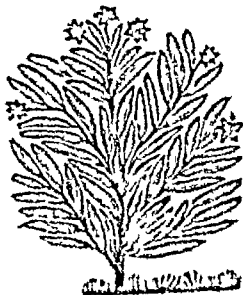
आधी भर जाय तब बीच में लुगदी धरै ऊ-
पर से फिर राख भरै मुहड़े तक राख को खूब
दाव दाव के भरै फिर चूल्हे पर चढ़ावै पहर
चार की आंच देवै तो भस्म होवै कोढ़ ति-
जारी अर्द्धांगवाले को आधे चावल भर देवै
परहेज न बिगाड़े तेल, खटाई नहीं खाय तो
आराम हो।

फोदड़ बेल
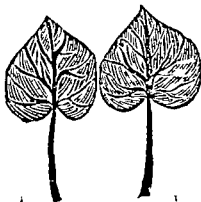
बद फोड़ा कोढ और नपुंसकता दूर करने की दवा

फोदड के पान पीसकर बद या फोड़ा के लगावे कैसा ही फोडा या बद हो उस को तुरंत ही आराम हो और फोदड के पत्ता तोले २॥ हरताल वर्की तोला १ कूटकर गोली बनावे पहिले ६ माशे पीछे १ तोला कोढ़वाले को देवे नित्य प्रति २१ दिन तक देवे रोटी अलोनी चना की खावे घृत खूप खावे आराम होवे सही नपुंसकतावाले को ५ तथा ७ दिन खवावे पथ्य रोटी दाल खवावे मोदक खवावे घृत खूप खवावे परहेज खटाई तेल गुड़ मास

६ न खाय मरद हो विधि इसकी उत्तम वैद्य से पूछ कर देवै।

कांगसी

ताकत और नासूर की दवा

धात जाय या प्रमेह होय तो कांगसी की जड़ तोळे ३ काली मिरच नग ७ और इला-

पची डाल घोट के निरने पीवे तो धात थमें प्रमेह मिटे ५ वा ७ दिन पीवे तो आराम होवे कागसी के पत्ता पीसकर टिकिया बनावे उसे घृत या अलसी के तेल में तले कि वह टिकिया जल जावे फिर उसे निकाल के मोम मासे ६ गूगल मासे ६ डालकर तले जब जल जाए तब मलहम घोट के त्यार करे तेल १ तोले डाले नासूर के लगावे तो आराम हो।

चोट की कसक बादी डोरू या मूंगा भस्म करने की दवा

चितावर की छाल घिसकर अधेली की परा-घर का कपडे का फाया कैंची से गोल करर के चोट की मार पे या कसक पे या डोरू पर या जानू की मार दूखती हो उस पर लगावे

चितावर पेड
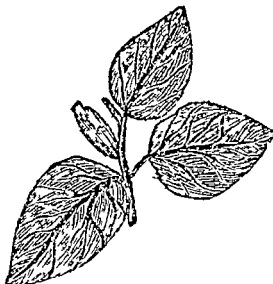
छाला पड़े आराम हो और जड पीस के उस में मूगा धर आच में धरे तो भस्म हो निर्व-लतावाले कू दे आराम हो।

पेट विकार कच्छ रोग और बंग भस्मकी दवा

पेट में व्याधी हो कच्छ रोग हो या फेफ-

वडदूदी

रिपा का रोग हो तो वडदूदी के पान तोले ३ मिरच कारी मासा १ मिश्री या गऊ की छाछ में डालकर दिन ३ तथा ५ पीवे तो आराम होवे यदि वंग भस्म करनी होय तो पारा तोले १ रांग तोला १ सामल पीसे पीछे पावभर वडदूदी की लुगदी सरवला में धर बीच में रांग धर दूसरे सरवला से बंद करे और एक

गड्ढे में ऊपला भर बीच में सरबला (सकोरा) धर के ऊपर ऊपला धर के आंच दे बंगेश्वर भस्म हो सुस्तीवाले को देवै ।

मल कबजियत गर्मी बादी खेन स्वास दम की दवा

सनाय के पान सुधे हुए तोले ८ आवले तोला १ इन दोनों को पानी डाल पीस के झारीबेर की बराबर गोली बनावै पीछे उसे

खाय कास, स्वास, दम, खेन को आराम हो

सनाय तोले ४ गुलाब के फूल मासा ६ सहत तोला ४ मिश्री तोले ३ रात्रि को सनाय भिजोय दे पीछे मिश्री और सहत मिलाय पानी पावभर पीवे जुलाब लगे गर्मी छटे घाटी मिटे खटाई तेल न खाय इसको चूरन में भी वर्तते हैं पथ्य न बिगडे पेट के सब रोग जाय आराम हो ।

कर्णमूल अदीठ और भगंदर की दवा

कर्णमूल अदीठ भगंदर या नासूर होय तो छोगागी लाल के फूल तोले २ मिश्री तोला १ काली मिरच नग ११ घोट के पीवे तो आराम हो छोगारी के पान फूल पीसे और उस में तेंदू के बीजन का आटा और थोडीसी मिसरी मिलाके फोडा के लगावे आराम होता .

छोंगारी लाल

दखे तो और लगावै और खावै तेल ख-
टाई न खाय।

सुजाक और धातु पुष्ट की दवा

गोंदी के पत्ता तोले २ मिरच नग ७ इला-
यची नग ३ मिसरी मासा ६ डालकर ५ या

पित्त की दाहा गर्मी की और कफकी दवा

आंवले की सिकजवीन या लोंजी या चट-नी बनाके खाय तो पित्त कफ दाहा गर्म को आराम हो आंवले का मुरब्बा चांदी के वर्क लगाके परभात को खावे तो स्वेन कफ दाहा गर्मी मिटे आंवले में बहुत गुण है लेने की विधि कई तरह की है नित्त खाय तो भी गुण बहुत करे है धात्रीफल सदा पथ्य स्वेन को ना-श करे मुख की गर्मी मिटे ।

जाड़े का ज्वर वादी और चोट लगेकी दवा

आक का दूध चोट लगी पर ३ दिन लगा-वे तो आराम हो आक की जड़ छाया में सु-खावे पीछे पीस के १ रत्ती गुड़ में मिलाकर

आक

दे तो जाड़ेका ज्वर जाय आककी जड ५ सेर लाकर १० सेर पानी में औटावे जब पानी जलकर आधा रहजाय तब छानकर जड़को फेंकदे पानी को फिर आच पर चढ़ावै और उस में ५ सेर गेंहू डालकर उबाले फिर उन

पित्त की दाहा गर्मी की और कफकी दवा

आंवले की सिकंजबीन या लौंजी या चट-
नी बनाके खाय तो पित्त कफ दाहा गर्म को
आराम हो आंवले का मुरब्बा चादी के वर्क
लगाके परभात को खावे तो सेन कफ दाहा
गर्मी मिटे आंवले में बहुत गुण हैं लैंन की
विधि कई तरह की है नित्त खाय तो भी गुण
बहुत करे है धात्रीफल सदा पथ्य सेवन को ना-
श करे मुख की गर्मी मिटे ।

जाड़े का ज्वर बादी और चोट लगेकी दवा

आक का दूध चोट लगी पर ३ दिन लगा-
वे तो आराम हो आक की जड़ छाया में सु
खावे पीछे पीस के १ रत्ती गुड़ में मिलाकर

आक

दे तो जाड़ेका ज्वर जाय आककी जड ५ सेर लाकर १० सेर पानी में ओटावे जब पानी जलकर आधा रहजाय तब छानकर जडको फेंकदे पानी को फिर आंच पर चढ़ावे और उस में ५ सेर गेहू डालकर उवाले फिर उन

का निकाल के सुखायले पीछे उसका आटा पिसवाकर पावभर आटे की पाटी करे उस में घी गुड मिलाकर नित १ पाटी २१ दिन तक खाय वादी गाठिया और भी वादी मात्र जावे

खांसी खेन दम और ज्वर की दवा

श्यामा तुलसी के पत्ता तोला ५ लोंग तोले १ कारी मिरच मासा ९ इन तीनों को पीस- कर ज्वार या मटर के प्रमाण गोली बांधे १ सुबह और १ शाम को खाय आराम हो अ थवा ऊपर लिखी हुई दवाओं को लेकर उन में एक मासा संखिया डालकर तुलसी के अ- रक में एक दिन भर घोटे फिर बाजरे के अ- नुमान गोली बांध के रखे पीछे १ गोली सु- बह और १ शाम को ले दम, खेन, ताप,

तुलसी

तिजारीवाले को ३ दिन दे तो आराम हो परन्तु खटाई तेल न खाय ।

पित्त की दाहा वमन और दस्त बंद करने की दवा

पित्त से कै या गर्मी से दस्त होते हों तो

पोदीना के पान तोला १ काली मिरच नग७ लौंग मासा आध मिश्री मासा ९ डालकर औटावे छानके पीवे दस्त और वमन बंद हो'

व अथवा पोदीना का अरक डालकर पीवे तो आराम हो पोदीना की चटनी बनाके खावे तो पित्त कू मारे पोदीना के पान और मिश्री मुख में रावे तो मुख का छाला मिटे आरामहो

वायसूल और भस्म रोग की दवा

रुद्रमाल का पान या बीज माशे ९ पीसके पावभर छाछमें दवा और थोडासा निमक डाल गरम कर पीवे तो भस्म रोग जाय पांच

तथा सात दिन पीवै रुद्रमाल का पान उबाल के दिन ३ पेट के बाधे तो वायसूल का दर्द जाय परहेज न विगाडेखटाई, तेल न खाय ।

पारा हरताल और तांबा भस्म करने की दवा

तांबे का चूरा तोला ३ पारा तोला ३ हरता-

ढाक
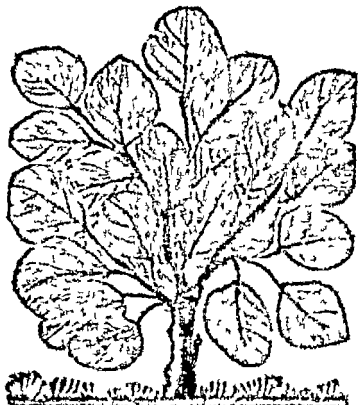
७ तोला २ आक के दूध में इन सब चीजों को २ दिन तक घोटे फिर ढाक की जड़ के रस

में ३ दिन तक घोटै पीछै ढाक की गीली मोटी लकड़ी लेकर उस में खोंतर कर के उस में तीनों चीजों की गोली बनाके धरै उस में ढाक की छाल का रस भरै पीछे कपड़ मट्टी कर आरने उपला की आच में धरै फिर कपड़ मिट्टी लकड़ी के चारों तरफ करै और आच छाणा की दे जब भस्म हो तो कितने ही रोगों पर चलै कोढवाले को और नपुंसक को देवै तो आराम हो यदि तकदीर सीधी होय तो सुवर्ण भी बने।

पीनस और सिगरफ मारण की दवा

धौरी नगदी के पत्ता तोले ३ वंदाल का डोरा माशे ३ कड़वी तूबी की गिरी माशे ३ आक का पत्ता एक इन सब दवाइयों को घोट

धोरी नगदी

कर सुंघनी बनावै और सुंघे तो पीनस मिरगी और छोलावाय को आराम हो तथा सिंगरफ रूमी तोले ५ गोमूत्र में भिजोय के धोरी न- गदी के रस में ९ या ७ दिन घोटे पीछे टि- किया बनावे नागरबेल के पान की लुगदी में

धरै और सरवला अर्थात् (सरवा) सपुटकर के पाच सेर कडा की आच दे जब भस्म हो जाय तब अर्द्धांगवाले या निर्बल को आध रत्ती दे ॥

ताप तिजारी और जाड़े के ज्वरकी दवा

सहदेई के पत्ता माशे १॥ काली मिर्च नग ७ रवि या मंगलवार को रोगीको देवैतो आराम हो यदि रूपरस बनाना होय तो चादी का चूर तोला १ सहदेई के पान की लुगदी में धरै और पुट ग्यारह या पन्द्रह दे तो भस्म हो फिर पीपर की छाल गीली पीस के लुगदीकर उस लुगदी में भस्म धरै पुट ३ देवै और कडों की आच दे निरथ्य भस्म हो खोआ में या

महदेई
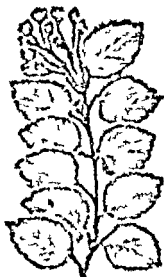
कोई पाक बनावे उस में डालके निर्बल मनुष्य को देवे तो आराम हो ।

प्रमेह गर्मी और सुजाक की दवा

काकड़बेल के पत्ता तोला ३ मिश्री मासे २ इलायची रत्ती २ पीस के पानी में घोल के खा-

काकडवेल

नकर पीवै तो प्रमेह मिटै तथा काकडवेल के पत्ता घोटकरछानकेपीवै या नौ दिनरोटी अलौनी खावै निमक ग्यारह दिन तक न खाय गुड़ तेल, खटाई, उड़द, बैंगन आदि वादी चीज न खाय परहेज न विगाडे मूग की दाल रोटी

साय गर्मी और सुजाक जाय आराम हो।

बवासीर और सिंगरफ मारण की दवा

नीम की निबोली की मिंगी मासे २ मिश्री

नीम
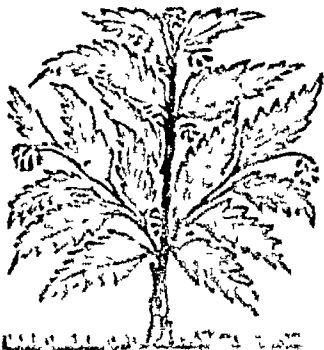
मासे ६ प्रभात को निरनै ही खाय वासी पानी के साथ आराम हो तथा नीम की मोटी जड ले उस में कोंचर करे उस में हींगलू धर नीम का चूर भरे और कपड मिट्टी कर दस सेर कडों में धरे फिर आंच देवै तो भस्म होवै अर्द्धांगवाले को या सुरतीवाले को पान में आध रत्ती देवै पन्द्रह तथा वीस दिन देवै और खटाई तेल न खाय तो आराम हो।

कृच्छ्र मूत्र गर्मी (आतशक) और नकसीर की दवा

ऊट कटारे की जड की छाल तोला १० मिसरी तोला १० सोंठ मासे ३ पीस के पुडिया २१ वांधे पीछे गऊ के पावभर दूध में १ पुडिया डालकर पीवै तो प्रमेह गर्मी जाय

ऊंटकटारा

नाथ चलती हो तो घी खटाई, तेल, मिरच न खावे परहेज राखे आराम हो ऊंट कटारे को शनिवार को नोतो दे और रविवार को धूप दे के ३ अंगुल की जड़ लावे सब किसी

बालक के पीड़ा होय तो माथे पर रक्खे तो छुटकारा हो।

मूत्र कृच्छ गर्मी और आख की दवा

सत्यानाशी का दूध दूखती आंखों में आंजे तो आराम हो यदि गर्मी से चटें पड़ गई होंय तो दूध और पत्तों का रस लगावे और सत्या-

सत्यानाशी

नाशी की जड़ तोला १ घोंटकर पीवे और सौ दिन तक मूंग की दाल रोटी अलौनी खाय घी जितना खाया जाय उतना खाय निमक तेल लाल मिरच उड़द की दाल न खाय यदि मूत्रकृच्छ्र हो तो सोरा मासे ९ तवे पर धरे पीछे सत्यानाशी के पत्तों का रस निकाल के तवे पर डाले दोनों को चूल्हे पर चढ़ाके आंच दे जब रस जल जाय और शोरा पकजाय तब उतारले पीछे शोरा मासा १ मिश्री मासे ९ पानी में डालकर मिलाके पीवे तो मूत्रकृच्छ्र रोग जावे मूंग मोंठ की दाल रोटी खाय ख टाई तेल गुड़ बैंगन न खाय ।

मेद पाठा और ऐंठन की दवा

मेद का पाठा (एक निशा की गांठ होती

खड़गोसण

है) होय तो खड गोसण के पान या फूल या जड पीसकर उस में थोड़ासा निमक डालकर पकावै और ५ या ७ दिन मेद या पाठे के बांधे तो उस के भीतर का कपास गलै आराम हो खडगोसण की जड की धूनी जिस बालक को ऐंठन का रोग हो उसे दे तो आराम हो ।
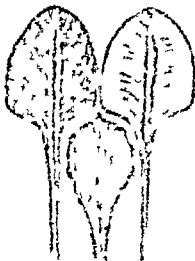
पालक

मल कब्जियत की दवा

पेट में मल की कब्जियत हो तो पालक का साग करे उस में गरम मसाला और सोंठ पीसके डाले फिर के या रोटी के साथ ७ या ९ दिन खाए तो आराम [illegible] मराई

न खाय बादी भी मिटे।

अजवायन

खांसी और मूंगा भस्म करने की दवा

अजवायन के पत्तों को सेक उनका रस निकाल थोडासा नमक डाल के बालक को दे तो बालक की खासी जावै यदि बडे मनुष्य के खासी होय तो अजवायन के पत्तो को सेक नमक मिलाकर खाय तो आराम हो और मू-

पालक

मल कबजियत की दवा
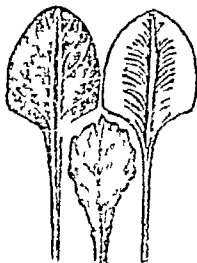
पेट में मल की कबजियत हो तो पालक का साग करे उस में गरम मसाला और सोंठ पीसके डाले निरने ही या रोटी के साथ ७ या ९ दिन खाय, तो आराम हो तेल खटाई
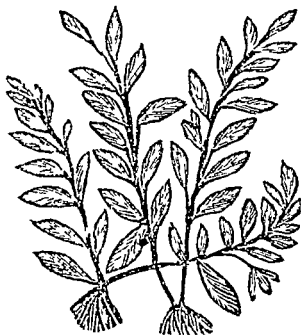
संखाहूली

या अंगूठे का अग्रभाग पकजाय) उस के ऊ-
पर बांधे तो तुरत ही आराम होवे।

दम और खेन की दवा

भूकटेरी के फल के बीज तोले १ लेवै और

गा भस्म करना होय तो अजवायन के पत्ता पीसके लुगदी करे उस के बीच में मूंगा या मूगा की जड़ धरे सरवला का सपुट कर के १० सेर कंडा की आच दे तो भस्म हो नि· र्बल को दे तो बल आवे।

कमताकत और सूलवाय की दवा

संखाहूली लाके सुखावे जब सूखजाय तब पीसके ६ मासे या तीन मासे गऊ के दूध में डालकर पीवे तो कमताकतवाले को ताकत आवे और वायसूल रोग भी मिटे ७ तथा ९ दिन पीवे तो आराम हो तेल, खटाई, बेंगन, उड़द की दाल न खाय यदि उगली या अ- गूठे में विसारा हो गया होय तो सखाहूली पीसकर उगली या अंगूटा के विसारे (उगली

संखाहूली

या अंगूठे का अग्रभाग पकजाय) उस के ऊ-
पर बांधे तो तुरंत ही आराम होवै।

दम और खन की दवा

भूकटेरी के फल के बीज तोले १ लेवै और

भूकटेरी

१ मासा उस में से पीसके ६ मासे सहत में मिलाके ५ या ७ दिन खाय तो दम, खेन जाय अथवा हलदी और बीज बराबर पीसके खाय तो आराम हो खटाई, तेल, गुड़ न खाय

पसरमा कटेरी

गर्मी (आतशक) की दवा

पसरमा कटेरी का पेड जड़ फूल फल और पत्ता समेत लावे और उस का रस निकाले उस में संखिया माशे ३ कत्था सफेद मासे ६

संखिया सुधा भया हो दोनों को पतरमा फ-
टेरी के रस में डालके ५ दिन घोटे पीछे मूंग
के प्रमाण गोळी बाध सुखावें पीछे पान की
बीड़ी में कत्था चूना लगाके सुपारी इलायची
और १ गोली धर सात दिन बराबर खाय या
नौ दिन खाय खटाई, तेल, गुड, लाल मिरच
न खाय घी खूब खाय तो गर्मी जाय।

सीतला (माता चेचक) की फुंसी पक जांय उनकी दवा

माताका व्रण पक गया हो तो नादणघन का
पान पीसके लगावे तो आराम हो और किस्म
का भी फोडा होय तो नादणघन का पान या
फूल के रस में हलदी घिसकर लगावे तो आ-

नादण वन

राम हो पारा को इसके फूलन की भावना दी जाती है गंधक जारण करें जब देते हैं जिस से पाराका मुख खुलै चन्द्रोदय बनावें जब बनता है।

माथे के बादी के दर्द और चबकों की दवा

मोरसली के फूल सूघै तो माथे के दरद को

बांधे मानपान की राख करे परन्तु नमक डाल के करे कच्ची न राखै पीछे १ चावल बराबर पान की बीड़ी में खाय तौ दम स्वास जावे।

पित्तपापरो

पित्त ज्वर और हड्ज्वर की दवा

पित्तपापरो मासे ३ कारी मिरच नग ७ दो- को पीसकर गरम पानी के साथ ... लेप

तौ ज्वर जाय अथवा पित्तपापरो तोला १ कारी मिरच मासे १ पीसकर पावभर पानी में उवाले जब आधा रहजाय तब थोड़ा नमक डाल के ३ दिन पीवें तो हड़ज्वर और पित्त ज्वर जाय।

गोभी
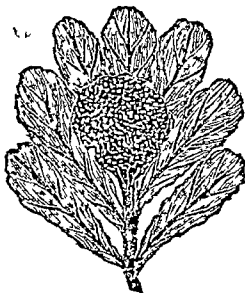
पच्छ रोग या पक्षोदर की दवा

जंगली गोभी जड पेड समेत लावै उस में से दो तोले लेकर काली मिरच नग ७ डाल के पीसकर आधपाव पानी में मिलाके ७ या ९ दिन पीवै खटाई, तेल न खाय दाल मूग की या मेथी का साग खाय कच्छ रोग या कठोदर को आराम हो ।

मकोय

पेटकी सूजन और तापतिल्ली की दवा

मकोय का शाक नमक और गरम मसाला डाल ५ या ७ दिन खाय तो लोहारफीयो (तापतिल्ली) जाय सूजन होय तो गरम मसाला न डाले सोंठ नमक डाल के उसे खाय तो सूजन जाय तथा सोंठ और मकोय का रस गरम कर सूजन पर लेप करे तो आराम हो ।

पेट के भराव लोहार और फियोकी दवा

पेट का भराव फीयो या लोहार होवे तो चौलाई के साग में पांचों नोन प्रत्येक एक मासे डालकर पकावे और निरने ही ७ या ९ दिन खाय तो आराम हो खटाई तेल गुड़ लाल मिरच न खाय अथवा चौलाई का रस
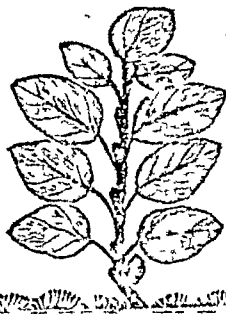
१ तोले निकालकर उस में ६ रत्ती सुहागा डालकर पीवे तो पेट का भराव लोहार या फी-यो को आराम हो परन्तु परहेज राखे।

सिंगरफ खाया फूटा हो उस की दवा

खाटी भाजी का रस तोले ५ बूटी के पत्तों

खाटी भाजी

का रस तोले ५ इन दोनों को मिलाकर ५ या ७ दिन पीवे और शरीर पर मालिश करे खाटी भाजी और मूली का साग खाय घृत खटाई तेल न खाय आराम हो ।

मन्दाग्नी खासी और दम की दवा

अदरक १ सेर उबाले उस को छीलकर पीसे
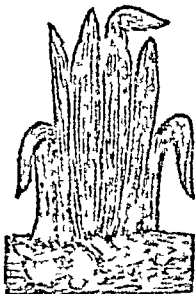
अद्रक

ओर जावदी हलदी तोले ९ पीस के घृत में सेककर अद्रक में मिलाके फेर पीसे उस में गुड़ पुराना १ सेर डाल मिलाकर बासन में भर देवे पीछे ३ पैसे भर नित्य खाय तेल ख-टाई न खाय तो आराम हो ।

चाह

ज्वर सर्दी और आलस्य की दवा

चाह तोला १ मिरच नग ११ लौंग नग ५ डालके उबाले निमक या दूध सक्कर गेर पीवै तो सरदी सुस्ती ज्वर जाय खटाई तेल न खाय नित्य पीवै तो आलस्य जाय।

माल तुलसी

धातक्षीण और गर्मी की दवा

मालतुलसी तोला १ रात्री को भिजो देवे प्रभात १ तोला मिसरी मिलाके ५ या ७ दिन खाय तो प्रमेह और सुजाक भी जाय खटाई तेल न खाय मूग की दाल रोटी खाय घी खाय शाक भिंडी का खाय येही दवा ११ दिन खाय

नमक मिर्च न खाय गर्मी को भी आराम हो

सोवा
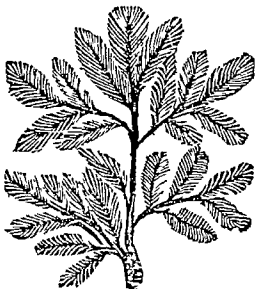
वाय गर्मी और गर्भवती स्त्री की बादी की दवा

सोवा की फक्की निरने ही प्रभात को लेवै

गर्मी वादी मिटे तथा सोवा मासा १॥ मिश्री मासा १॥ मिला के खावे तो कोई हानि न होय खटाई तेल न खाय आराम हो ।

चंग भस्म करने की दवा

रांग सुधा भया तोले ५ लेवै उस पर पाग

तोले ४ डाले पीछे उतारकर पीवे और आधसेर दूधी पीसके उसमे से आधी१सरवलामें धरे उस पर फेर पिसा भया रांग धरे ऊपरसे आधी लुगदी धर दूसरा सरबला ओंधा मार के कपड़ मिट्टी देकर गजपुट छांणा की अग्नी देवे जब बग भस्म तैयार होवे निर्वल मनुष्य को माखन या खोआ में १ रत्ती नित्य १० दिन तक दे अथवा दो रत्ती दे खटाई तेल न खाय आराम हो बल आवे ।

संखिया और हरताल भस्म करने की दवा

बिछवा की लकडी जला के राख करै या इमली की राख करै अथवा पीपर की छाल की राख करै पीछे बिछवा के पत्ता आधपाव पीस-

बिछवा
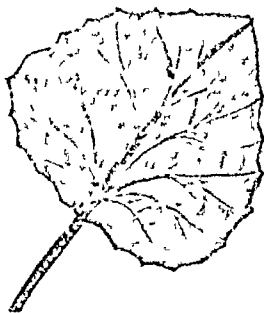
कर लुगदी बनावे उस में हरताल वा संखिया तोले दो भरे फिर राख को हाथ दाबकर एक हांड़ी में भरे जब हांडी आधी के अनुमान भर जाय तब उस के बीच में लुगदी धरे ऊपर से

फिर राख दाब दाब के भरै पोली न रहे खूब कसके ठसाठस हांड़ी भर जाय पीछे चूल्हे पर चढ़ावै पाच पहर की आंच दे सखिया या हर-ताल भस्म हो ठंडे होने पर निकाले हरताल दम, खेन, स्वास, कोढ़ पै चावल बराबर पान में ९ या ११ दिन देवै और तेल, खटाई न खाय आराम हो।

गाजा गोरखी
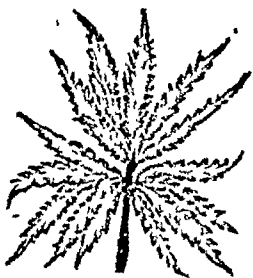
दूध न खाय तो कफ दम खेनकी बीमारी होवै तो बदनामी के सबब जियादा बर्ताव में नहीं आता ।

रामफल

प्रमेह और गर्मबादी की दवा

पका भया रामफल लेकर छिलके उतार क-

गांजा

तिजारी इकतरावाले को देवै तो आराम हो
३ दिन दे गांजा मासे १॥ तमाकू मासे ४
चिलम में धर एक सुबह एक शामको पीवै तो
पित्त कूं सीतकूं बादी कूं बदहजमी कूं मेटै दूध
घी अवश्य ही खाय जियादा पीवै और घी

दूध न खाय तो कफ दम खेनकी बीमारी होवे तो बदनामी के सबब जियादा बर्ताव में नहीं आता ।

रामफल

प्रमेह और गर्मबादी की दवा

पका भया रामफल लेकर छिलके उतार क-

पड़ा में डाल मसल के उस का अर्क निकाले फिर उस मे से १५ तोले अर्क और इलायची बंशलोचन, गिलोयसत, जेठी मधु, प्रत्येक ३ माशे मिश्री तोला १० सब को मिलाकर शीसा या बोतल में भरे १ तोले प्रतिदिन खाय तो सुजाक प्रमेह और गरम बादी मिटे ११ या १३ दिन खाय तेल गुड़ खटाई न खाय आराम हो।

गर्मी आतशक और रसकपूर फूट निकला हो उसकी दवा

पेठे का पानी तोला ४ जो बकरी जंगल में चरती हो उस का दूध तोले ४ इन दोनों को मिलाकर ११ या १५ दिन पीवे तो आराम हो अथवा पेठे का पाक बनाय खांड की चासनी

पेठा

कर के उस में इलायची वंशलोचन सालम स-
फेद मूसली विदारीकंद गोखरू दक्खिनी
कोंच के बीज केसर गुलाब जल तज ये सब
दवाई अनुमान से डाल कर खावे तो आत-

शक गर्मी को मेटे और ताकत लावे तेल गुर न खावे।

दाद् और भस्म रोग की दवा

आव का रस पावभर औटा भया दूध गऊ का या भैंसका पावभर घृत तोले ५ सक्कर तोले ९ डालकर मिलाके इस कुल वजन को दो या

आम
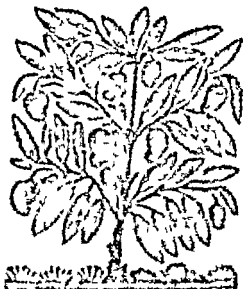
तीन वक्त में खालेवै अथवा दस रुपये भर आव का रस तथा दस रुपये भर औटा भया दूध खांड तोले ४ घृत तोले ३ इन सबको मिलाकर ११ या १५ दिन तक खाय तेल खटाई न खावै तो आराम हो।

जटा संकरी
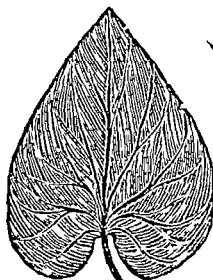
सुजाक और धातक्षीण की दवा

जटा संकरी की गाठ लाके छीले और उस के छोटे छोटे टुकडे कतर के सुखावें और उस में से एक तोला ले और दूध के साथ पीवें अथवा पाच तोले दही में मिलाकर चाटे सात या नौ दिन चाटे तो आराम हो सुजाक जाय और सक्कर में मिलाके फनकी लेकर ऊपर से पावभर दूध पीवे तेल, गुड, बैंगन, मिरच, खटाई न खाय घृत खाय धातु पुष्ट होवे ।

मिलावे और सिंगरफ का जोर निवारण और हरताल भस्म करने की दवा

इमली के पत्तों का रस और हल्दी मिलाकर उस को खूब घिसके बालक के लगावे तो

इमली

आराम हो तथा इमली के पत्तों का रस और मूली के पत्तों का रस दोनों रसों को मिला-कर मालिस करे और मूली के पत्तों का रस तोले ४ लेवे उस को ७ या ९ दिन पीवे सिग-रफ फूट निकला हो तो आराम हो हरताल

तोला १ पहिले आक के दूध में भिजोवे पीछे इमली की राख हांडी में भरे जब आधी भर जाय तब बीच में हरताल धर के ऊपर से फिर राख दाब दाब के हांडी के मुंह तक भर के उस को चूल्हे पर चढ़ावे और चार पहर की आंच दे तो भस्म हो तथा इमली की मिंगी का आटा तोल एक गऊ के दही में मिलाके खाय तो कांच निकलना बंद हो अथवा इमली के पत्तों के काढ़े में हींग सेंधा नमक डाल पीवे तो कांस रोग जाय जैसे अग्नी तृण को जलाती है वैसे ही यह रोग को जलाता है ।

गर्मी से मुख में छाले पडे हों उसकी दवा

सुफेद चिरमिटी के पत्ता चाब के मुंह में से

चिरमिटी

लार डाले तो छाले मिटे अथवा चिरमिटी के पत्ता तोले ४ कबावचीनी मासा १।। इलायची मासा १ सिंघाड़े तोले १ कत्था सफेद मासे ६ मिश्री तोला १ सब को पीस के गोली बनावै सुखा के मुंह मे रख लार टपकावै आराम

हो गर्मी होय तो चिरमिटी के पत्ता मिसरी और इलायची चाबे तो गरमी मिटे ।

कड़वी तूंबी
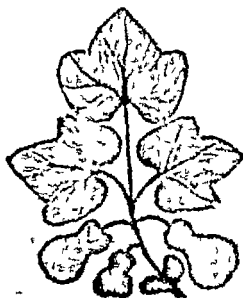
माथे और अंडकोसों के दर्द की दवा

कड़वी तूंबी की गिरी और पंदाल के सोहा

को पीसकर सूंघे तो माथे का दर्द मिटै कडवी तूंवी की गिरी तोले १० सार्बन तोले २ पानी में डाल उसे मसल के पान पर अथवा कपड़े पर धर के अडकोसों पर बांधे तो आराम हो अथवा गिरी और साबन को गरम कर के अडकोसों पर बांधे दिन ३ तो पोतों का दरद जाय तथा छिटक गये होंय तो चढ़ें यदि बादी गर्मी के मस्से होंय तो कड़वी तूवी में पानी भर के गुदा को धोवै तो मस्सों की बीमारी जावे।

पाठे और जानू की दवा

रतनजोति की जड़ और आवाहलदी दोनों को पीसकर गऊ के मूत्र में खदका के ५ या७ दिन बाधे तो पाठे और जानू को आराम हो
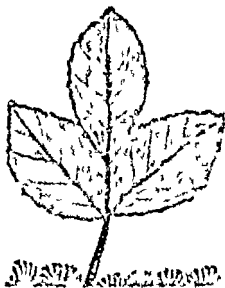
बाल

से लोहू आता होय तो बाल का रस तोले ४ सात दिन पीवे और खाने को अलोनी रोटी ज्वार की सात दिन तक खाय घृत खाय व-जन नहीं उठने दे और न हवा लगने दे आ-राम हो तथा बाल का रस छाले और दांतों

के लगावें और लार टपकावें तो आराम हो।

कंठमाला नासूर और जेरबाजकी दवा

लुगलुगी का पञ्चांग लाके पीसकर उस में थोड़ी सी मिसरी डाल उसे पीसकर कंठमाला

लुगलुगी

नासूर या जेरबाज के लगावें तो आराम हो

पांच तथा सात दिन लगावै यदि ऊगली या अगूठे में बिसारा होगया हो तो या और किसी भाति का फोडा हो तो इस दवाई के लगाने से आराम हो ।

धात दोष और बद की दवा
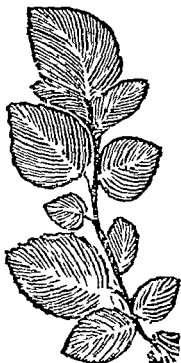
सांठडी के पत्ता पीसकर बद पै तीन या पांच दिन उस के ऊपर बांधे तो आराम हो। तथा सांटेडी की जड़ लेकर सुखाकर पीसे और गाय के दूध के साथ सात या नौ दिन पीवे तो धात के रोग मात्र जाय पृन जियादा खाय खटाई, तेल, गुड़, बैंगन आदि न खाय।

अतीसार संग्रहणी अग्निमंद गर्मी खूनी बवासीर और बग भस्म की दवा

भांग को अग्नी से सेक के पीसे और सहत में मिलाय के रात को सोते समय चाट के सोजाय अतीसार संग्रहणी जाय अग्नी प्रज्व-लित हो तथा भांग मासे ३ काली मिरच मासे

भाग

आध इलायची नग २ गेर के घोट छानकर पीवै तौ बदहजमी और बवासीर जाता रहै भांग का पाक भी बनता है और भाग बहुत सी औषधियों में भी डाली जाती है भाग और गाजे का बीज एक ही है भांग के बीजों का पाक बनता है और तेल भी बनता है ताप ति-

धात दोष और बदकी दवा

साठेडी के पत्ता पीसकर घद पे तीन या पांच दिन उस के ऊपर बांधे तो आराम हो तथा सांठेडा का जड लेकर सुखाकर पीसे और गाय के दूध के साथ सात या नौ दिन पीवे तो धात के रोग मात्र जाय घृत जियादा खाय खटाई, तेल, गुड़, बेंगन आदि न खाय।

अतीसार संग्रहणी अग्निमंद गर्मी खूनी ववासीर और वंग भस्म की दवा

भांग को अग्नी से सेक के पीसे और सहत में मिलाय के रात को सोते समय चाट के सोजाय अतीसार संग्रहणी जाय अग्नी प्रज्व-लित हो तथा भांग मासे ३ काली मिरच मासे

भाग
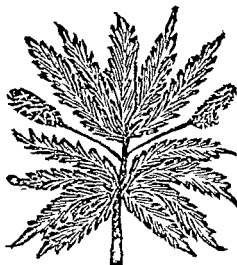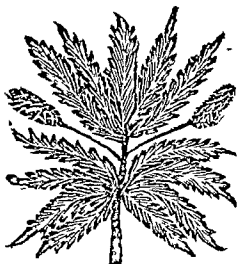
आध इलायची नग ३ गेर के घोट छानकर पीवै तो बदहजमी और बवासीर जाता रहै भाग का पाक भी बनता है और भांग बहुत सी औषधियो में भी डाली जाती है भाग और गाजे का बीज एक ही है भांग के बीजों का पाक बनता है और तेल भी बनता है ताप ति-

जारी इकतारा और दमवाले को १ रत्ती पान में दे यदि भांग में वंग भस्म करनी होय तो रांग को सोध के पत्रा करके बारीक टुकड़ा करे पीछे थपे भये कडा पर भांग बिछावे उस पर रांग के टुकड़े धर फिर भांग बिछावे और ऊ-पर से दूसरा कंडा धर चारों तरफ कंडे लगा-कर अग्नि दे भस्म हो निर्बलता को मेटे ।

बादी गठिया गर्मबादी सीत और कूलन बाय की दवा

सुरजना का गोंद पावभर लेकर घी में फु-लावेऔर आटा गेहूका आधसेर घीमें सेके फिर उस में आधसेर गुड़ मिलावे और सोंठ तोले चार पीसकर सब को मिलाके मोदक बांधे पीछे ९ दिन खाय तो बादी को आराम हो

सुरजना

अथवा सुरजना की अंतर छाल कूटके रस नि-
काले उस में गेंहूं का दलिया रांध के गुड मि-
लाके खाय घी कम खाय दिन ९ तथा ११
खाय तो आराम हो या पत्तों का साग या फली
का साग खावे अथवा सुरजना के बीज और

जारी इकतारा और दमवाले को १ रत्ती पान में दे यदि भांग में बंग भस्म करनी होय तो रांग को सोध के पत्रा करके बारीक टुकड़ा करे पीछे थपे भये कंडा पर भाग बिछावे उस पर रांग के टुकड़े धर फिर भांग बिछावे और ऊ-प[illegible] कंडा धर चारों तरफ कंडे लगा-[illegible] र हो निर्वलता को मेटे ।

चादी सीत और कलन
[illegible] त्वा [illegible]

कालकडू

पुट नौ या ग्यारह दे तावा भस्म हो जिस मनुष्य की उमर ५० वर्ष से ऊपर हो उसको दे ताकत आवे कम उमरवाले को कदापि न देवें ।

बादशा अपल सांप और विसोंदार सांप फाटंशी दवा

मिरचाकद लाके धर रक्खे बालक के मा-

मिरचा कंद

दले का रोग होय तो १ रत्ती दे, आराम हो गरम पानी के साथ दे अमल खानेवाले को ४ रत्तीकी गोली बनाकर बमन हो जहर उतरे चित्तीदार सांप काटे को ९ मासे गर्म छाछमें दे जहर उतरे मिरचाकंद में हरताल भी मरती है हरताल सोधकर कंद में धर कपड़ मिट्टी करके गड्ढे में धर दस सेर कंडों की आंच दे

कर भस्म कर के रक्खे उत्तम वैद्य से पूछ के काम में लावे ।

नीम गिलोय

गर्मी और बवासीर की दवा

नीम गिलोय मासे ३ इलायची रत्ती २ बस-लोचन आंव [illegible] ६ मिलाकर

पीसके खाय नौ दिन तक तो खूनी वादी ववासीर और गरमी मिटै नीम गिलोय बहुत सी दवाई और क्वाथों में वरती जाती है इसलिये इसके कम गुण लिखे हैं।

वेकर

वाय गर्म के मस्सों की दवा

वेकरके पत्ता तोला १ इलायची नग ७ काली मिरच नग ५ इन तीनों को मिलाकर घोट

कर भस्म कर के रक्खे उत्तम वैद्य से पूछ के काम में लावे ।

नीम गिलोय

गर्मी और बवासीर की दवा

नीम गिलोय मासे ३ इलायची गर्त्ता २ बस-लोचन आधे मासे मिसरी मासे ६ मिलाकर

पीसके खाय नौ दिन तक तो खूनी वादी बवा-
सीर और गरमी मिटे नीम गिलोय बहुत सी
दवाई और क्वाथों में बरती जाती है इसलिये
इसके कम गुण लिखे हैं ।

बकर

वाय गर्म के मस्सों की दवा

बेकरके पत्ता तोला १ इलायची, नग ७ का-
ली मिरच नग ५ इन तीनों को मिलाकर घोट

के सात या नौ दिन पीवे तो आराम हो यदि मस्से बाहर की तरफ हों तो बेकर के पान तोले ४ गाय का दही तोला १ नीलाथोथा रत्ती४इन तीनोंको पीसकर एक गोली बनाकर सुखावे पीछे पानी में घिसकर मस्सों के लगावे तो कुल मस्से गिर जाय परन्तु तेल, गुड़, बैंगन खटाई न खावे ।

मूंगा रूपरस और बंग भस्म करने तथा पीनस की दवा

कच्चे करोंदे को पीसकर गोली बनाकर उस के बीच में मूंगा धर के कंडा की आग में धरे तो मूंगा भस्म हो अथवा चादी सोधी हुई के पत्तर कर के लुगदी में धर सरबला का सपुट करके पांच सेर कंडों की आच दे इसी तरह

करोंदा

ग्यारह पुट दे तो भस्म हो तथा करोंदा के पत्ता पीसके रोटी करै उस पर सोधे हुये राग के टुकड़े धरै ऊपर नीचे कडा धर के आंच दे और करोंदे का फल सूंघै तो पीनस का रोग जाय।

कड़वी कचरी

त्रिसारे और विसफोडा की दवा

कडवी कचरी को भूभल में पकाकर उसका थोड़ासा मुह फाटकर उस में खाड़ भर के जिस उंगली में विसारा हो उस को पहनादे अथवा विसफोडा हो तो ३ या ५ दिन बांधे तो जलन मिटे आराम हो।

गोकरणी

हिचकी और वादली की दवा

गोकरणी के बीज या जड रत्ती दो घिसकर वालक की मा के दूध में या गरम पानी में या घुटी में देवै तो वादला का रोग जाय हर तरह का दर्द जाय तथा हिचकीवाले को गोकरणी की जड या फूल हलदी और हजारी का फूल चिलम में पावे या जड घिस के गरम

पानी में पीवै या खाली जड़ या फूल पीवै तो हिचकी मिटै आजमूदा है।

कागसी

नासुर और सिंगरफ मारण की दवा

कागसीके फूलमें नौ दिन सिंगरफ घोटै फिर ग्वार पाठेमें पाच दिनघोटै पीछेजामनके पत्ताया कच्ची जामनके रसमें तीन दिन घोट गोली बाध सरवला का संपुटदे पांच सेर आरणे कंडा की

आच दे तो भस्म हो अरधाग पर पान में २ रत्ती दे ताकत को १ रत्ती खाय आराम हो खटाई तेल न खाय ।

तपनी बेल

पानी में पीवे या खाली जड़ या फूल पीवे तो हिचकी मिटे आजमूदा है।

कागसी
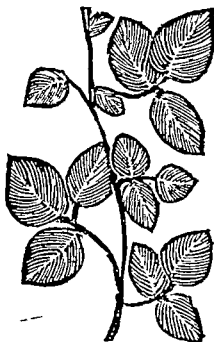
नासुर और सिंगरफ मारण की दवा

कांगसीके फूलमें नो दिन सिंगरफ घोंटे फिर ग्वार पाठेमें पांच दिनघोटे पीछजामनके पत्ताया कच्ची जामनके रसमें तीन दिन घोट गोली घाप सरवला का संपुटदे पाच सेर आरणे कंडा की

आच दे तो भस्म हो अरधांग पर पान में २ रत्ती दे ताकत को १ रत्ती खाय आराम हो खटाई तेल न खाय।
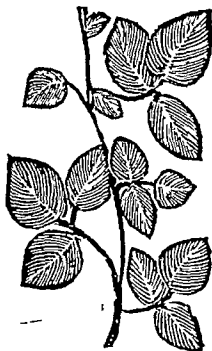
तपनी बेल

हड्ज्वर और विषम ज्वर

साटी तपनी बेल की जड़ तोले ३ लेवे इस को उबाल के उस में जवा हरड नग २ पीपल लींढ़ी नग १ डालकर ४ तोले अंदाज पाच या सात दिन पीवे तो आराम हो या जो बकरी जंगल में चरती हो उस का दूध लेवे उस में पीपल लींढ़ी नग ३ पीसकर डाले फेर पांव या हाथ की हथेली या सब बदन में मालिश करे तो हड्ज्वर और विषम ज्वर जाय।

धात पुष्ट की और बल कारक दवा

कच्चे लिसोड़े लाकर उन को सुखाके पीसे उस में से १ तोला पाव भर दूध में मिलाकर पांच या सात दिन पीवे तथा पक्के लिसोड़े से।

लिहसौड़ा
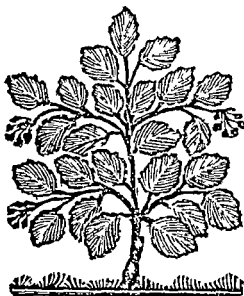
मोटे कपड़े में डालके खूब मसल के उन का सत्त निकाल लेवै फिर सत्त से दुगना आटा लेकर घिरत में सेकै लेकिन गेहू का आटा ले उस में खोवा पाव भर तथा सक्कर सब की

बराबर हो और घी सबसे आधा तथा इलाय-ची और वंशलोचन डालकर मोदक बनाके तैयार कर लेवे पीछे उस को ग्यारह या पन्द्रह दिन खाय तो धात अर्थात् वीर्य को पुष्ट करे और बल पराक्रम आवे ।

धात पुष्ट और आखों की दवा

पुनर्नवा की जड़ लाकर सुखा लेवे उस में सुखी जड १ तोला मिरच नग ७ इलायची नग ३ मिश्री तोला १ घोट कर पाच दिन पीवे यह सब एक मात्रा है पुनर्नवा की जड सहत में घिस आंखन में आंजे तो पड़ुडल और धुं-धरोग जाय और छाछ के पानी में घिसके आंजे तो फुली कटे मोतियाबिंद मिटे पानी में घिस के आंजे तो धाप कूलन और धगलगन्द जावे

पुनर्नवा
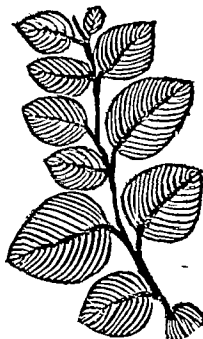
परहेज से रहे खटाई तेल न खाय ।

माथे की गंज और माथेके फोड़ा कीदवा

अरणी के पत्ता तोला ९ नारियल की गिरी

अरणी
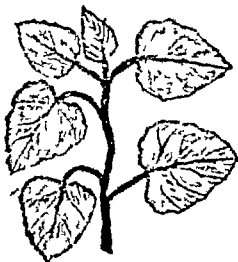
तोला ४ मिश्री तोला २ पानी में डालकर सब को पीस कपडे में छानकर सत्त निकाल माथे के लगावे धोके फिर दूसरे दिन लगावे इसी प्रकार पन्द्रह या बीस दिन बराबर लगावे तो माथे की गज और हर तरह का फोड़ा फुंसी और भगिया फूटा फोड़ा को भी तुरंत आराम हो

रुद्रवती

रुधिर विकार और पारा भस्म करने की दवा

रुद्रवन्ती के रस मे पारे को तीन दिन घोटै पीछे लुगदी में धर सरवला सपुट कर कपड मिट्टी दे दो घड़ी कडों की आच में धरै जब भस्म हो तब गोली बाधे इसी प्रकार ३ बार

धरें तो भस्म हो रुद्रवन्ती तोला १ काली मिरच रत्ती ४ घोटके पीवे तो खून साफ हो परहेज न बिगाड़े तेल, खटाई, बेंगन, गुड़ न खाय आराम हो।

रतवंती

गर्भ की रक्षा और मासिक रुधिर जारी करने की दवा

पीरे फूल की रतवंती लाके सुखावे दस मूषी

हुई को तोला १ सौंठ मासे ६ गुड़ तोले ३ सब को उबाल के पीवे तो रजस्वला हो और जिस का गर्भ गिर जाता हो वह न गिरै दूध के साथ पीवे तो पगर थमें आराम हो।

फुलवंती

गर्भ रहने और रक्त प्रमेह की दवा

फुलवंती रविवार को लावे और जब स्त्री ऋतु स्नान कर ले तो उसी दिन फुलवती मासा ६

पाटे की कतली तीन अगुल की कतर के उस पे आंबा हलदी पीसके लपेटकर आंखों पे बांधे तो आराम हो ।

काली जीमी
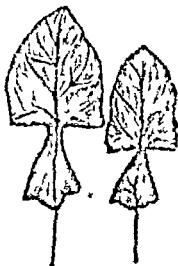
तांबा भस्म करने की दुवा

काली जीमी को पीसकर लुगदी करे उस

लुगदी के बीच में तांबे का बुरादा तोला १ धर के दस सेर कंडों की आंच दे इसी प्रकार पुट २१ देवै तावा भस्म हो और मूंगा भी भस्म हो कम ताक़तवाले को पान में या मिश्री में या मावे में २ रत्ती दे अथवा किसी पाक में गेर के खाय तो ताकत आवै खटाई तेल गुड न खाय।

मुनक्का

गर्मी पित्त और मन्दाग्नि की दवा

पित्त ज्वर या गरम वादी की खासी होवे तो मुनक्का तोले १६ मिरच काली तोला १ छोटी पीपर मासे ८ जीरा सफेद मासे ९ निमक साभर तोला १ निमक सेंधा तोला १ पहले मुनक्का के बीज निकालकर पीछे ये सब चीजों को मिलाके कूटकर आच पर सेक के झारी बेर के प्रमाण गोली बाधे एक दिन में तीन या चार गोली खाय तो गरमी की खासी और पित्त ज्वर जाय भूक खुले तेल खटाई न खाय परहेज न बिगाडे।

आतशक गर्मी और खून साफ होने की दवा

अगूर खाय अथवा अंगूर का सिरका पीवे

अंगूर

तो आतशक गर्मी जाय अंगूर की तासीर तर-गर्म है खून साफ करता है अंगूर का मुरब्बा भी होता है तथा निमक के साथ भी खाया जाता है और पित्त को मारता है।

नकसीर की दवा

हसराज तोला १ मुलहटी मासे ३ इलायची माशे १ गिलोय सत्त मासे १ मिश्री मासे

हंसराज

९ सब को पीसकर मक्खन में मिलाके ७ या ९ दिन खाय तो नकसीर बंद हो और नासिका में मैल भी न जमे ।

दाद गर्मी और शरदी की दवा

दाद को चाकू से खुजाकर अंजीर का दूध

अजवायन

लगावे तो दाद को आराम होय पके हुए, अं-
जीर खाय तो गरमी मिटे यदि दूध में डाल
के अंजीर खाय तो सरदी मिटे अजीर की ता-
सीर तर गरम है खून को साफ करता है अ-
जीर का मुरब्बा भी बनता है ।

धात पुष्ट और कमताकत की दवा

सफेद मूसरी तोला १ पीसकर दूध में डाल

सफेद मूसरी

के ७ दिन पीवे तो धात पुष्ट हो अथवा मूसरी
पाक बनाना होय तो दूध कढ़ाई में सेर १ च-
ढ़ावे उसमें मूसरी सफेद ३ तोले पीसके डाले
फिर घी और बादाम की मिंगी पिसी हुई तथा
मिश्री इलायची केशर १ रत्ती डाले जब दूध
का खोवा होजाय तब उतार के जायफल से र-

रखे निर्बल मनुष्य को खाने को दे तो बल आवे और हर तरह की कमज़ोरी मिटे।

सितावर

नहरुवा सुजाक तथा संखिया के अवगुण की दवा

सितावर की जड़ तोला २ मिरच मासे १

घोटकर आठ पैसा भर पानी में तीन दिन पीवै परन्तु खटाई न खाय तो नहरुवा को आराम हो तथा सुजाक हो तो ७ या नो दिन पीवै तो आराम हो यदि मक्खिया ने विकार कीया हो तो सितावर की जड़ तोला १ नित्य खाय तो आराम हो।

खाड़ाधार

सुजाक और प्रमेह की दवा

खाड़ाधार तोले २ मिर्च नग ९ इलायची

नग ७ मिश्री तोला १ घोटके पानी में या आधसेर दूध में गेर पीवै तो आराम हो अथवा खाडाधार तोले ३ पीसके पाव भर गऊ की ताजी छाछमें ७ या ९ दिन पीवै परहेज न विगाड़े तेल खटाई न खाय आराम हो।

जंगली गोबी

सुजाक और गर्मी की दवा

गोबी जगली पीरे फूल की पसरमा छत्ता

होता है उस की जड़ तोला १ मिरच नग ५ या ७ डालके ७ या ९, दिन घोटकर पीवे रोटी अलोनी खाय घी खूब खाय गरम मसाला न खाय आराम हो खटाई तेल न खाय मूंगा या बंग भस्म करनी हो तो गोवी के पत्तों को पीस लुगदी करके उसमें जिन्स धर फूकेतो भस्महो

यंत्र स्वरूप और यत्र विधि

लौंग इलायची जावित्री जायफल यदि इन में से किसी चीज का अर्क निकालना होवे तो जिन्स को तसला में धरे तसला के बीच में प्याली धरे तथा तसला के ऊपर तवा धर के चारों ओर मुद्रा देवे और तवे में पानी भरे चूल्हे में धड़ा की आंच दे जो प्याले में अर्क

कर्पूर संपुट यंत्र

पड़े उस को पान में खाय अथवा सिर में लगावे तो फायदा हो।

बीजों का तेल निकालने की विधि

धतूरे तथा और और बीज जिन में चिकनाहट हो उन का तेल निकालना हो तो आतसी सीसी में कपड मिट्टी देकर बीज शीशी में धरे और एक ठीकरा में छेद कर के उस

होता है उस की जड़ तोला १ मिरच नग ५ या ७ डालके ७ या ९ दिन घोटकर पीवे रोटी अलोनी खाय घी खूब खाय गरम मसाला न खाय आराम हो खटाई तेल न खाय मूंगा या वग भस्म करनी हो तो गोवी के पत्तों को पीस लुगदी करके उसमें जिन्स धर फूकेतो भस्महो

यंत्र स्वरूप और यंत्र विधि

लौंग इलायची जाविन्नी जायफल यादि इन में से किसी चीज का अर्क निकालना होवे तो जिन्स को तसला में धरे तसला के बीच में प्याला धरे तथा तसला के ऊपर तवा धर के चारों ओर मुद्रा देवे और तवे में पानी भरे चूल्हे में कडा की आंच दे जो प्याले में अर्क

कर्पूर संपुट यंत्र

पढ़े उस को पान में खाय अथवा सिर में ल-
गावै तो फायदा हो ।

बीजों का तेल निकालने की विधि.

धतूरे तथा और और बीज जिन में चिक-
नाहट हो उन का तेल निकालना हो तो आ-
तसी सीसी में कपड मिट्टी देकर बीज शीशी
में धरे और एक ठीकरा में छेद कर के उस

अधोमुख पाताल यंत्र

छेद की गह शीशी की नली निकाले जमीन में गड्ढा खोद गडढे में प्याला धर शीशी का मुंह उस में करै शीशी के चारों तरफ कंडों का चूरा धर आग देवै ।

कपूर वरास करने की विधि

कपूर तोले १० कलमी शोरा मासे ६ कवाब चीनी (सीतलचीनी) मासे ६ काली मिरच

कच्छप यंत्र

मासे ६ हरड़ मासे ९ मिश्री तोले ३ चंदन तोले ३ कपूर कचरी मासे ६ लोहबान का डोरा मासे ६ खस तोले ५ इलायची तोला २ सब को केला के पानी में दो दिन घोटे पीछे कु-ण्ढ पर प्यालो धर आटे की मुद्रा देकर पानी का पोता फेरता जाय वरास उड़ के लागे सो भीमसेनी कपूर होता है और मसाला कम हो

तो तसला में धरै आंच मदी २ दे फूल उतरै

तिमीचर यंत्र

घरास भीमसैनी लोहवान मैंनसिल और सखिया का फूल लगे

इन सब दवाओ को दिन तीन केला के रस में घोटे तीन दिन पीछे हाड़ी या तसला में धर मुद्रा देवे आटे की हाड़ी या तसला के मुह पे उलटा घाटका (कटोरा) धर

मुद्रा दे चूल्हे पर चढ़ा आंच दे पहर दो बाटके पर पानी का पोता देता जाय फूल उड के लगे सो ले।

छप्पै यंत्र

बरास करन विधि

चीनिया कपूर तोला ६ लोहवान मासे ३ मिसरी मासे ९ हरड मासे ९ केसर मासे ३ इलायची मासे ३ कबाबचीनी मासे ३ चन्दन

मासे ९ शोरा मासे ३ पुनर्नवा मासे ३ साठं-ड़ी की जड़ मासे ६ खस मासे ६ कपूर कचरी माशे ६ इन सब को पीसके केला के रस में घोटकर हाड़ी में भरें मुह पर कटोरा धर आटे की मुद्रा देवे जो उड़के कटोरा के लगे सो बरास हो ।

बरास करन यंत्र

जायफल जाविन्री लौंग लोहबान या और जिन्स का अर्क या चोवा पड़े ।

गिरद गिल यंत्र

सर्व क्षार का तेजाब निकाले जैसे फिटकिरी शोरा नौसादर कसीस इन सब को बराबर ले

रस सिंदूर विधि

पारा सुधा भया तोले ४ गधक आवलासार

तोले ९ इन दानों को घोटके शीशी में भरै और ठीकरा में वालू रेत भर बीच में शीशी धरे शीशे का मुंह खुला रक्खे आंच पहर ४ की दे जब धूआ बंद हो तब उतारे और सोना डाले तो चंद्रोदय कहे नहीं रस ासदूर कह प- हर ६४ की आंच दे तब चद्रोदय होवै ।

मृगाग विधि

पारा तोले १ रांग तोले १ नोसादर तोले १ गंधक आंवलासार तोले १ पहले रांग को

गलाकर उस में पारा डाले फिर नीचे उतार के नौसादर गंधक डाल सब को पीसकर शीशी में भर कपड़ मिट्टी दे ठीकरा में रेत भर बीच में शीशी धरे मुख शीशी का खुला रक्खे पीछे उस में आंच दे धूआ बद हो जब उतारे जो दवा का रग सुवर्ण सरीका हो तो उसे खास, स्वास, दम, खेन, कफवाले को पान में दो रत्ती ७ या ९ दिन देवै परन्तु तेल, खटाई न खाय।

पारा तोला १ सिंगरफ तोला १ हरताल तोला १ मैंनासिल तोला १ नौसादर तोला १ आंवलासार गधक तोला १ ये सब को पीसे और शीशी पै कपड़ मिट्टी दे सुखाकर ये सब दवा शीशी में भरै और शीशी का मुंह खुला

पानी डाल आचदे अर्क निकालके अतर उतारे

गज कुंभाक्ष यंत्र

संख दरियाव करन विधि

फिटकरी तोले १० जवाखार तोले १० सुहागा तोले १० नमक पांचों तोले १० चूना तोले १० ये सब बराबर लेके हांडी में भरे और १ कुल्हड़े और हांडी का मुंह घिसके मि-

लाके मुद्रा दे शीशी को पानी में राखै संख द-
रियाव उतरै।

कूर्म आतिश यंत्र

नरेली बीज और फल का चोआ निकालने की विधि

नरेली के चोआ से दाद जांय कुरंज के बीज
के चोआ से खसरी जाय लौंग के चोआ से
सिर का दरद जाय जावित्री जायफल का तेल
शामिल कर चोआ निकालै।

पानी डाल आंचदे अर्क निकालके अतर उतारे
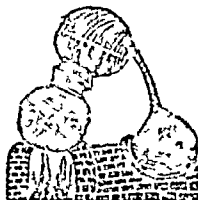
गज कुंभाक्ष यंत्र

संख दरियाव करन विधि

फिटकरी तोले १० जवाखार तोले १० सुहागा तोले १० नमक पांचों तोले १० चूना तोले १० ये सप बराबर लेके हांडी में भरे और १ कुलहड़े और हांडी का मुंह घिसके मि-

लाके मुद्रा दे शीशी को पानी में राखै संख द-रियाव उतरै।

कूर्म आतिश यंत्र

नरेली बीज और फल का चोआ निकालने की विधि

नरेली के चोआ से दाद जाय कुरंज के बीज के चोआ से खसरो जाय लोंग के चोआ से सिर का दरद जाय जावित्री जायफल का तेल सामिल कर चोआ निकालै।

सिगरफ का पारा निकालने की विधि

सिगरफ तोले २० हलदी तोले २० इन दोनों को ग्वार पाठे के रस में घोट टिकिया

(गीला कपड़ा गखें)

बनाकर हाडी में धरे पीछे दूसरी हाडी ले दोनों का मुंह घिसके मिला मुद्रा दे चूल्हे पर चढ़ाके आंच दे ऊपर की हाडी पर पानी का पोता फे-रता जाय तो पारा ऊपर आवे ।

संखिया का फूल उड़ाने की विधि

संखिया तोले १० लेकर गोमूत्र में भिजोवे

(पानी का पोता)

पीछे जल भागरा के रस में १ दिन घोट ग्वार पाठे में घोटे पीछे वन्दरोई में घोट के हाडी में भरे फिर दूसरी हाडी का मुह घिस मुंह से मुंह मिला मजवूत मुद्रा दे चूल्हे पर चढा आच देवै और अमर बेल के पानी का पोता देता जाय जो फूल उड़े उस को रखले यह दवा दम खैन, स्वांस, कांस को मेटै पथ्य राखै ।

लोहवान का फूल उड़ाने का यंत्र

कागद कुस्थली का यंत्र

लोहवान के फूल से स्वास खांस सरदी जाय माथे पर लगावे और खावे तो सुस्ती जाय पान में दे परहेज रक्खे तेल खटाई न खाय और दवाओं में भी बरता जाता है ।

अधो उर्द्धक शीशी का यंत्र

अजयपाल, मालकागनी, पारस पीपर या धतूरे के बीज पहिले शीशी को कपड़ मिट्टी

बीजादि का तेल उतारण यंत्र
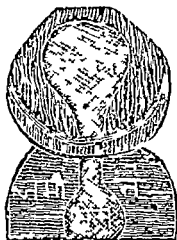
देकर सुखाले पीछे ये चीज भरे हांडी की पेदी में एक छेद कर शीशी का मुंह निकाले फिर छाणा की आच दे।

खापरो तोले १० एक कपडे की कोथळी में भर के उस कोथली का मुख डोरा से बांध एक हाडी में लटकता बांधे और उस हांडी

अजयपाल खापरयों और संखिया पकावन यंत्र
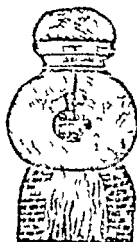
(डोल यंत्र)

में गोमूत्र या नरमूत्र भर मुह पे ढकना भर मुद्रा दे चूल्हे पर नड़ाने आंच दे ७ या ९ दिन पकावे नित्त मूत्र भर भर के मुद्रा दे पीछे

खरल में डार के घोटे और काली मिरच छिलका उतारी तोले २॥ सोंने के वर्क तोले २॥ मोती की ख़ाक तोले १॥ अबर तोला १ कस्तूरी माशे ७ काली कपिला गऊ का माखन तोले ५ डाल पहिले एक एक घोटे सब मिलाकर घोटे और नीबू का रस देता जाय तीन दिन रात बराबर नीबू का रस देकर घोटे और नीबू का रस देता जाय इक्कीस या इकत्तीस दिन घोटें जब तक माखन की चिकनाई न जाय तब तक घोटे पीछे एक मासे की टिकिया जितनी बने उतनी बनावे मालती बसत तैय्यार हो हड्डी ज्वर सीतज्वर या कमताकत वाले को सहत और छोटी पीपर के साथ दे या सतोपलादि चूरण देवै।

अजयपाल सिंगरफ या संखिया डोलयंत्र से दूध में या प्याज के अरक में या जल भागरा के अरक में या ईख के रस में पकावे तो बहुत गुणकारी है इसको बरतने की विधि उत्तम वैद्य से पूछे सुस्ती अर्द्धांग ताप तिजारी बेला ज्वरादि बहुत से रोगों को मेटे ।

राल मोम बिरोजा आदि का तेल उतारण यंत्र
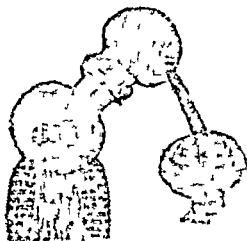
बांस नली का डमरू यंत्र

विरोजा राल मोंम या रूमीमस्तगी एक सेर ले कढ़ाई में डाल के मंदी २ आंच दे पीछे ईंट का चूर बेर या मटर प्रमाण कर के विरोजा या गलता भया मोंम मे दो सेर मिलाकर हांड़ी में भरे पीछे दूसरी हाड़ी का मुंह घिस के मुह से मुंह मिळाके मुलतानी मट्टी और कपड़ मटटी देकर डोरी या रस्सी से दोनों हडियों को मजबूत करे पीछे इस यत्र से इसी भाति नली लगावे मट्टी पर चढ़ाके आच दे ऊपर की हाड़ी पर पानी का पोता देता जाय तेल उतरै इसी तरह मोम या रूमीमस्तगी का तेल उतरै बिरोजा के या रूमीमस्तगी के तेल को तीन बतासों में भर ९ या ११ दिन खाय

तो सुजाक और प्रमेह जाय अथवा मिश्री तोले १ इलायची रत्ती २ पीस के ५ तोले पानी में और विरोजा का तेल पहिले दिन ४ बूंद दूसरे दिन ९ बूंद तीसरे दिन १२ बूंद डाल के पीवे या दूध में डाल पीवे सुजाक प्रमेह जाय ताकत आवे बादीवाले के मोम के तेलकी मालिस करे तो बादी जाय ।

संखिया के फूल उड़ाने का यंत्र

आले कपड़ा गये

मोटी और बड़ी ईंट लेकर उस में गढ्ढा कर सखिया घी गुवार पाठे में घोटकर ईंट के गोल गड्ढे में धरे ऊपर से तावे की कटोरी औंधी मार मुद्रा दे मूली के पत्तों का रस अथवा जल भागरा के पत्तों के रस का या अमरवेल के रस का पोता कटोरी पर देता जाय फूल उड के कटोरा में लगे उसे लेवै ताप तिजारी जाय।

सीसा सोधकर ठीकरा में धर आच देवै जब गल जाय और सुरख होजाय तब नीम के सोटा से या आक के सोटा से घोटता जावै और भांगरे का रस अथवा ग्वारपाठे का रस डालता जाय सीसा जल जावै तो जानों नागेश्वर भस्म हो जब उसे नीचे उतारै बादी

नागेश्वर यन्त्र
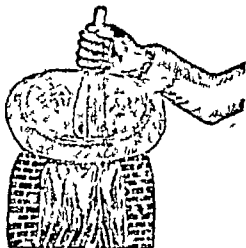
या सुस्ती गर्मी प्रमेह सुजाक को मेटै गरमी वाले को पके भंय केला में टैवे नौ या ग्यारह दिन तेल खटाई न खाय पथ्य राखे रोटी दाल खाय गर्मी सुजाक जाय ॥

सीसा तोले २० सुधाभया ले कढ़ाई में डाले जब गल जाय तब त्रिफला एक मुट्ठी डाल

नागेश्वर भस्म यंत्र

नीम के सोटा से घोंटे और भांगरा का रस देता जाय या त्रिफला की चुकटी देता जाय भस्म हुवे बाद लोग तोले २० काली मिरच तोले २० जायफल तोले २० जावित्री तोले २० अजवायन तोले २० हलदी तोले २० सब को शामिल पीसके चुकटी डालता जाय और

घोटता जाय पहर चार की आंच दे तो नागेश्वर निरुष भस्म हो सर्व रोगों पर चले वादी गरमी और प्रसूता स्त्री या सुस्ती वाले को दे आराम हो गरमी वाले को पके केला में दे गरमी जावे उत्तम वैद्य से पूछ कर दे तो बहुत फायदा करे गुड़ तेल खटाई मिरच न खाय और भी नुकसान करनेवाली चीजों से परहेज राखे तो आराम होवे सही ।

भांग के मूत निकालने या गामिया सोपने या कुपद्या सोपने की विधि

कढ़ाई मे घी डाले और पांच सेर भांग डाल के पकावै पाच दिन पीछे टाट या मोटी गजी में ढ़ाल के घी निचोड़कर निकालै खाने में दे या माजून या गुलकद में डाले या पान में लगाके खाय संखिया सोधन होय तो कढ़ाई में दूध या जल भागरा का रस भरै और संखिया की पोटली बाध कढ़ाई में डालै और इतना औटावे कि दूध जल जाय तव उसे नित्य उमदा खोवा में वरते या और दवा में वरते ताप तिजारी वेलाज्वर या गरमीवाले को दूध में दे आध रत्ती दे या वादीवाले को ३ दिन दे घी खावे और परहेज राखै और विधि उत्तम वैद्य से पूछ ले।

भस्मी संपुट यंत्र
संखिया निर्धूम पचावन विधि
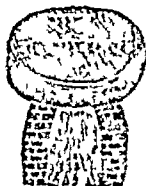
मुड़ा पाती की राख अथवा तिली की राख अथवा ओंगा की राख या पीपल की राख में पहिले संखिया को आक के दूध में भिगोवे पीछे मट्टी की कुंडी में ऊपर लिखी हुई किसी राख को दाब दाब के भरे जब आधी भर जाय तब संखिया धरे ऊपर से राख दाब दाब के

खूब मजबूत भरे कि उस में से धूआ न नि-
कले (ध्यान रहै जहां राख नीचे ऊपर भरने
का काम पड़े बहुत ही मजबूत भरे यादि इस
का धूआ आखों में लग जावे तो बहुत नुक-
सान करैगा) पीछे चूल्हे पर चढ़ावे चार पहर
की आच उस के नीचे देवै जब सीतल होजाय
तब निकाले उस के बरतने की विधि उत्तम
वैद्य से पूछे यह सर्व रोगों पर चले।

हरताल भस्म बनावन विधि

हरताल वर्की तोले २ आक के दूध में दिन
३ भिजोवै पीछे मोटे थूहर के दूध में ३ दिन
भिजोवै पीछे पलास की राख में या इमलीकी
छाल की राख में पाहिले राख को हाड़ी में दाब

भस्मी संपुट यंत्र

दाब के भरे जब कि आधी हांडी भर जाय तब उस में हरताल धरे ऊपर से फिर राख दाब दाब के भरे फिर हांडी का मुख बंद कर ढकनी धर मुद्रा दे चुल्हे पर चढ़ावे पहर चार की आंच दे जब शीतल हो जाय तब उस को निकाले और राख निथारी कांच पर दे।

हांड़ी का बालू यंत्र

चन्द्रोदय रस पाचन विधि

पारा तोले २० खरल में डालकर ३६ कांचरी उतारे फिर ईंट के चूर में तीन दिन घोटै पीछे जल भांगरा के रस में जगली गोभी के रस में चौलाई के रस में गुवार पाठे के रस में नेगड के रस में सहदेई के रस में और

भस्मी सपुट यंत्र

दाब के भरे जब कि आधी हांडी भर जाय तब उस में हरताल भरे ऊपर से फिर राख दाब दाब के भरे फिर हांडी का मुख बंद कर ढकनी धर मुद्रा दे चूल्हे पर चढ़ावे पहर चार की आंच दे जब सीतल हो जाय तब उस को निकाले और ताप मिजाजी कोढ़ पर दे ।

हाड़ी का बालू यंत्र

चन्द्रोदय रस पाचन विधि

पारा तोले २० खरल में डालकर ३६ कांचरी उतारे फिर ईंट के चूर में तीन दिन घोटै पीछे जल भांगरा के रस में जंगली गोभी के रस में चौलाई के रस में गुवार पाठे के रस में नेगड के रस में सहदेई के रस में और

लक्ष्मणी के रस में छत्तीस दिन घोटके धोंव जब शुद्ध होजाय तब नींबू के रस में घोंट पीछे गंधक जारन करना और पारे का मुख खोलना और पारे को तोल कर उस से दूना आंवलासार गंधक उत्तम लेकर खरल में घोंट पीछे नागदमन का फूल तोला २० की भावना दे पीछे सोने के वरक तोले २ घोंट फिर एक आतशी शीशी को कपड मिट्टी देकर शीशी को धूप सुखा के उस में घुटी हुई कुल जिनस धरे और एक बड़ी पत्थर या मांट से ठीकरा में बालू रेत भर के उस में शीशी धर चाम्मठ या बत्तीस अथवा तीस पहर की आंच देनी चाहिये ब्राह्मण भोजन कराकर स्वच्छ जगह करनी स्त्री की छाया नहीं पड़ने दे शी॰

तल भये बाद निकालनी वह चन्द्रोदय रस तैयार हो खाने की विधि न्यारी न्यारी है उत्तम वैद्य से तलास कर काम में लावे खूनको वढ़ावे वदन को ताकत दे संतान हो वीर्य्य पुष्ट हो कामदेव को प्रवल करें भूक को वढ़ावे और कितने ही रोगों को फायदा करता है परन्तु उत्तम वैद्य से तलास कर के खाय ।

कनेर घृत काढन विधि

सफेद कनेर की जड तोले २० कूटकर दो धड़ी दूध में डालकर दूध को औटाकर जमावे पीछे उस दही को बिलोकर माखन निकाल के घृत तैयार कर पान में लगाके खाय तो ताकत आवे अफीम खाना छूटे दम खन शीत को मेटैं परहेज राखै जवानी की बुरी

कच्छपयंत्र
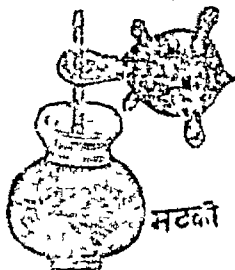
मटकी

आदतों से, जो नस निर्बल होगई हों उन में भी बल आवे ।

माल दरियाव विधि

फिटकिरी तोले १० अपामार्ग तोले १० शोरा तोले १० नौसादर तोले १० सुहागा

गज कुभाक्ष यंत्र

तोले १० इन सबचीजों को सामिलकर भत्रकामें भरके मुद्रा मजबूत कपड़ मिट्टीकी देनी चाहिये, और पानीको बारबार बदले जब गरम होजाय तभी गरम पानी को निकाल कर ठडा पानी भर देवें।

कच्छपयंत्र

आदतों से, जो नस निर्वल होगई हों उन में भी बल आवे ।

मास दरियाव विधि

फिटकिरी तोले १० जवाखार तोले १० शोरा तोले १० नौसादर तोले १० सुहागा

गज कुम्भाक्ष यंत्र

तोले १० इन सबचीजों को सामिलकर भव-कामें भरके मुद्रा मजबूत कपड़ मिट्टीकी देनी चाहिये, और पानीको बारबार बदले जब ग-रम होजाय तभी गरम पानी को निकाल कर ठडा पानी भर देवें।

गज कुंभाक्षयंत्र
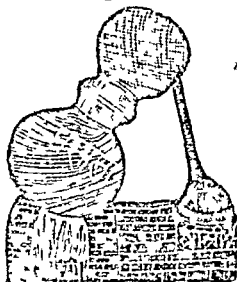
अन्य दरियाव विधि

पांचों नमक, जवाखार, सज्जीखार, अपामार्गखार, पपरियाखार, सूखाचूना, नौसादर, चणखार, ये सब बराबर लेकर एक पुराने मट्टी के घड़ेमें भरे उसके ऊपर एक कुल्हड़ा

औंधा धरके मुद्रा मुलतानी और कपड मिट्टी की दे और शीशी का मुख कुल्हड़े में छेदकर पोवै मुद्रा मजबूत करे दरियाव उतरे पेट की वादी आदि को मेटै। इसके वरतनेकी विधि उत्तम वैद्य से पूछे।

फिरंग यंत्र
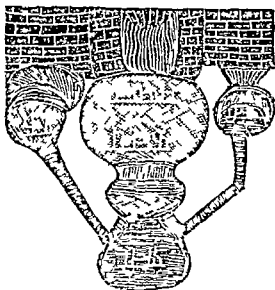
अर्क अतर उतारण विधि

संदल का तेल या रोसाका तेल या बदाम रोगन भवका में देकर डेगमें फूलया मसाला डाले, फूल से दूना और मसाले सूखे से ६ गुना पानी डाले इस यत्र से उतारें। इसी काम के कारीगरों की सलाह ले।

विरोजाका तेल उतारण यंत्र
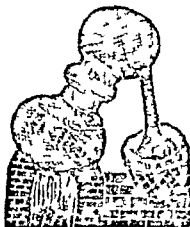
बिरोजाका तेल उतारण बिधि

बिरोजा १ सेर लेकर कढाई में गरम करै, गलजाय तब ईंट का चूरा झरबेरी के बराबर करके बिरोजामें मिलावै और गरम करै ककड बिरोजा को पीजाय तब उन कंकड़ों को एक हांड़ी में भर दूसरी हांड़ी उसपर औंधी धर मुद्रादे दोनों हँडियों का मुंह मजबूत सुतली से बाध कपड मिट्टी दे आंचपर चढ़ावै ऊपर ली हाडी पर पानी का पोता देताजाय तेल उतरै पांच बतासे भरके या पानी में दो तीन बूंद तेल डार पीवै सुजाक और प्रमेह जाय आराम हो।

संखिया मारण पीपरकी राखमें और हरताल मारण इमली के छिलकों की राख में

संखिया तोले पाच या चार बिछवों के पत्तों

भस्मी संपुट यंत्र

की लुगदी में धरे, फर पीपरकी छालकी राख हाडी मे आधी भरके उस के बीचमें लुगदी धरे ऊपर से राख दावके भरे और चूल्हे पर चढ़ाकर पाचपहर आच देकर भस्म करले, सीतल हुचे बाद निकाले- उत्तम वैद्य से पूछ कर ताप तिजारी वादी खेन दमास्वास आदि

को आधरत्ती पानमें दे, खटाई तेल न खाय, आराम हो सीत सुस्ती भी जाय ।

तथा हरताल तोले ४ हंसराज पावभर इन दोनों को पीस के उसकी लुगदी बीचमें धरै ऊपर से राख दाब २ के भरै और चूल्हे पर चढ़ाके ४ या ५ पहर की आच दे, शीतल हुवे पीछे निकाले भस्महो किसी उत्तम वैद्य से पूछकर कोढ़ तिजारी वालेको दे आराम हो ।

वेवचीछाजन और गर्मीके फोडों की दवा

कत्था सफेद तोला १ चिनियां कपूर तोला १ हरतालवर्की तोला १ चारों दवाइयों को सामिल पीस के घाव पर घृत लगाके ऊपर दवा बुरके, गरम पानीसे धोवे दिन ७ लगावै आराम हो यदि गरमी होय तो रजानका पान वारीक लुनरया के पान, वलवीज के पान, चण दूदाके पान, जल भागरेके पान, प्रत्येक नो मासे लेकर मसलै उसमें बनारसी खाड़ तोले २ मिलाके ९ या ११ दिन खाय, खटाई तेल गुड वगैरे नखाय मूग की दाल और अ-लोनी रोटी खाय, घी खाय और भी ऐसी वैसी चीज न खायतो गरमी जाय आरामहो।

गर्मी की दवा

गऊ का ताजा दही १ सेर ले मट्टी या काठ या पत्थर की कूडी में डाल उस में ३ मासे संखिया डाल के गर्मीवाले के हाथ १ घंटा तक दही में धुवावे पानी बिलकुल न डाले और हाथ के भी पानी न लगने दे कपड़े से पोंछ ले उसी समय माखन गऊ का पाव-भर खाय पीछे दाल रोटी खाय ऐसे ही तीन दिन करे परहेज राखै घी खाय चाहे जैसी गर्मी हो आराम हो दूध बिलकुल न खाय।

गर्मी की दवा

रस कपूर मासे ३ ले पोटली बांध ढाईसेर दूध में डाल औटावे जब आधा दूध रहे तब

उतार ले इसी तरह तीन वार पका के रस क-
पूर को निकाल तोल कर तीन मासे के तीन
भाग करै रस कपूर मासा १ इलायची मासे ३
लाल मिरच का वीज मासे २ इन तीनों को
पीसकर पानी डाल के चनाके प्रमाण गोली
बाधे नौ फिर गऊ का दही लाकर कपड़े में
बांध के पानी निचुड़ जाने दे यहा तक कि
सव पानी निकल जाय पीछे दही में ३ गोली
डाल निगल जाय और दात के न लगने दे
इसी भाति तीन दिन दे रोटी अलोनी खाय
घी नहीं खाय मूग की दाल या मेथी तोरई
की तरकारी और अलोनी रोटी खाय दिन२१
तक तेल खटाई गुड़ बैंगन उडद की दाल न
खाय परहेज राखे चाहे जैसी गर्मी होवे आ-

राम हो पीछे चौथे या पाचवे दिन घी खाय ।

गर्मी की दवा

गर्मीवाले को पहिले जुलाव देकर पीछे दवा देवै हरड बहेड़ा आवला प्रत्येक दो दो तोले लेकर दरदरी पीस चिलममें पीवे इस की चार पुड़िया बनावे एक पुडिया सामको दूसरी पहर रात गये तीसरी आधी रात चौथी ३ पहर रात गये खाय रोगी को सोने न दे जागता रक्खै प्रात.काल चनाकी दाल धोय के खाय और घी खाय इसी भांति ३ दिन करै गरमी जाय आराम हो खटाई तेल मिरच बेंगन उडद की दाल न खाय घी पाव भर नित्त खाय ।

गर्मी के जुलाव की दवा

जमालगोटा तोला १ लेकर मिटटी के कुल्हड़े मे गोवर भर उस में जमालगोटा धर चूल्हे पर चढ़ावे पहर एक की आच देकर उस मे से निकाल के आटाकी वाटी में पचावे तो पीछे दूध में पचावे फिर मिंगी निकाले और मिंगी में निवीं होती है उसे निकालकर सिल पै पीस कपडे में डाल के निचोड़ और द मासे अजमोद में उस की आधी बूंद डाल के पीस कर तीन पुड़िया बनावे एक पुड़िया रोज प्रातःकाल गरम पानी के साथ लेवे और गरम पानी को पीवे तो दस्त लगे और भूक लगे गेहूं और गुड़ की मीठी थूली खाय घी एक रत्ती भी न डाले मीठी थूली फक्त गेहू की

खाय इसी भांति तीन दिन ले जुलाव बंद होय उस के बाद जितना घी खाया जावे उतना खाय खटाई तेल गुड़ बेंगन उड़द की दाल नहीं खाय तो गरमी जाय ।

गरमी के फोड़ों की मल्हम

गऊ का घी एक हजार पानी से धोवे कत्था सफेद मासे २ मुरदासन मासे १ इलायची मासे १ सिंगदराज मासे ३ रसकपूर मासा १ जस्त का फूल मासा ३ कबाबचीनी मासा १ कौडी जली हुई नग १ इन सब को पीस छानके घी में मिलाके घावमें लगावे आरामहो

गर्मी और खूनी बवासीर की दवा

रसवंती तोला १ मिसरी कालपी या बीकानेरी तोले ३ इन दोनों को सामिल पीसके

पानी की बूंद देकर चनाके प्रमाण गोली बांधे पीछे १ गोली नित्त ७ या ९ दिन बासी पानी के साथ ले गर्मी जाय खून पडना बंद होवे मूंग की दाल रोटी और घृत खाय परहेज न विगाडे आराम हुये बाद कुल पदार्थ खाने चाहिये ॥

गर्मी से मुंह आगया हो उस की दवा

झाडीबेर की जड की छाल कचनार की अंतर छाल बबूल की अतर छाल अनार के पत्ता चमेली के पत्ता बजूदंती के पत्ता अथवा जड कत्था मासे ६ फिटकिरी मासे डेढ़ तवाखीर मासे सवा इन सब को हांडी में डालकर दो सेर पानी में उवाले जब आधा रहे तब उतार ले ठंडा होने पर कुल्ला करे तीन चार दिन

करै आराम हो उस के बाद म गऊ का ताजी दही और रोटी खाय ।

गर्मी की दवा

कत्था सफेद मासे ६ संखिया का फूल मासे ३ भोरिंगणी का पंचाग कूटकर उस का रस निकाले पीछे रस में दोनों दवा ३ दिन घोटै और काली मिर्च के प्रमाण गोली बांधे पान में कत्था चूना लगा इलायची धर उस में १ गोली धर के नित्त खाय ११ अथवा १५ दिन खाय यदि बहुत दिनों की गर्मी होय तो २१ दिन खाय आराम हुये पीछे दवा का उतार करे चना की दाल पावभर कच्ची लेकर भिजोवै गरम मसाला डालकर छौंक के खाय झाड़ी जात को उत्तर दिशा में आमिप का

के फुलावे कि वह कच्चा न रहजाय फिर नागर वेल के पान में एक या दो रत्ती सात या नौ दिन देवे तो आराम हो ।

दाद की दवा

गंदा विरोजा तोले २ सुहागा तोला १ गंधक तोले २ पहिले विरोजा को कटोरी में डाल के गलावे उस में सुहागा पीसके डाले पीछे गंधक डाल तीनों को लकडी से हिलाकर मिलावे और हाथ से टिकिया बना लेवे उस के पानी में घिस के दाद पै पांच या सात दिन लगावे तो आराम हो और दाद जाती रहे ।

वादी की दवा

सोंठ तोला १ नित्त पीसकर नमक मिला के टिकिया बना के घृत में तलके खाय तो वा-

सतवा सोंठ
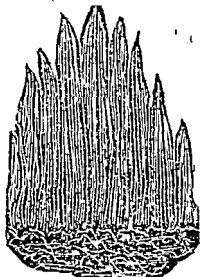
दी जाय अथवा सोंठ मासे ६ गुड तोले २ इन दोनों को मिलाके खाय अथवा सोंठ के लड्डू बना के खाय तो वादी जाय सोंठ में गुण बहुत हैं खाने और लगाने में भी बरती जाती है सोंठ का अर्क भी निकलता है वादी और

बदहजमी को मटती है निमक के साथ लेने से वादी मिटै सीत सन्निपात को भी मेटती है स्त्री लोगों को भी दीनी जाती है सोंठ का जुलाब दूध या सक्कर के साथ लिया जाय है इसको उत्तम वैद्य से तलास कर लेवे ।

हरड

बादी कबजियत और उदर विकार की दवा

जवा हरड़ को भूनकर निमक के साथ नि-रने ही सुबह खाय अथवा हरड तोले ९ गो मूत्र में भिजोवें दो दिन पीछे साफ पानी से धोवें उस में सोंठ मासे ६ जीरा मासे ६ काली मिरच मासे ६ सांभर निमक मासे ३ इन सब चीजों को पीसकर मिलावे पीछे घी में भूने फिर इसका सेवन करे हरड पांच या चार नित्त खाय उदर विकार मिटे हरड को घिसकर ग-रम कर के आंखों पर लेप करै तो आंख अच्छी होय हरड़ में बहुत गुण हैं और भी बहुत सी दवाइयों में बरताव अक्सर करके होता है ।

उदर विकार चोट और कसक की दवा

राई को पीसकर चोट या कसक पर लगावे तो आराम हो अथवा राई पीसकर छाछ या दही में डाले उस में नमक डाले मिरच भा-

वना वमूजिब डाले गरम मसाला चाहे तो डाले चाहे मत डाले उस को हांड़ी में भरकर मुह वाध के दिन तीन दावों दे काजी हो गई उठे जब पेट की व्याधिवाले को दे कांजी पाव भर निरने ही देवे तो लोहार फियो कोदर मिटै ७ या ९ या ११ दिन दे कच्छ रोग भी जाय कांजी का पानी पीने से उदर विकार जाय।

ताप और डौरू की दवा

नावे के पान मासे ३ काली मिरच नग ७ डाले पीस के छानकर थोड़ासा गरम कर पीवे तो जीरणज्वर और इकतरा तिजारीवाला ज्वर जाय तीन दिन पीवे नावे की जड़ पीस के टिकिया वनाके डौरू पर वाधे ऊपर गीले

में धर सपुट कर कपड़ मिट्टी दे कंडा सेर पांच की अग्नी दे भस्म हो अर्द्धांगवाले को दे तो आराम हो लजवती की जड़ रविवार को लाकर छल्ला बनाके कमर में बाधे तो नाभि ठिकाने आवे ।

कीड़े और बादी की दवा

मालकांगनी का तेल कीड़ों की जगह पर लगावे और ऊपर से पान पीसकर लगावे तो कीड़ा मरे बादी वाले के अंग में मालकांगनी के तेल की मालिश करे तो बादी जाय यदि संखिया पकाना होय तो मालकांगनी का तेल पकावे और संखिया ढीव (ठीकरा) में धर ऊपर तेल को चुवो दे तो मोतिया पचे सोमल (संखिया) तोला १ मालकांगनी का तेल १

मालकागनी

सेर का चुबो दे इसका सेवन पान में राई अ-
नुमान दे बादी जाय तेल खटाई, नहीं खाय
रोटी दाल घी खावे ९ या ११ दिन।

हरताल मेंनसिल मारण की दवा

छुईमुई के पत्तों के रस में हरताल ७ या ९
दिन घोट टिकिया बांधे और छुईमुई के पत्ता

छुईमुई पीरा फूल

पीसके लुगदी कर उस में टिकिया धर कपड़ मिट्टी कर पीछे वालूरेत हाड़ी में भर उसमें कपड़ मिटटी का गोला धरे फिर ऊपर से वालू रेते भर चूल्हे पर चढ़ाके पहर ४ या ५ की आच दे सीतल भये बाद निकाले कोढ़ पै चले

तिजारी जाय उत्तम वैद्य से पूछले इसी भाति मैंनासिल भस्म होती है।

छुईमुई लाल फूल

सिंगरफ मारण मूंगा भस्म करनेकी दवा,

छुईमुई के पत्ता पीसकर लुगदी करै उस में मूंगा धरै पीछे सरवला सपुट कर कडों की आंच दे मूंगा भस्म हा अथवा सिंगरफ तोले

२ आक के अथवा बड़ के दूध में ५ या ७ दिन भिजोवे पीछे छुईमुई के पत्ता पावभर पीसकर उस की लुगदी में सिंगरफ धरे गोला बाध पीछे कपड मिटटी दे सरवला सपुट कर बकरी की दो धडी मेंगनी में घर के आच दे भस्म हो सीतल हुये बाद निकाले अर्द्धांग पर चले उत्तम वैद्य से पूछकर दे ॥

सुजाक प्रमेह और आंखों की दवा

बबूल की छाल पीसकर किसी मटके या घडे से लगा देवे और सोते समय आंखोंके बाधे तो आराम हो प्रात काल डाले दिन ३ बाधे अथवा बबूल का गोंद तोले २ पाव भर गाय की छाछ में सात या नो दिन पीवे तेल खटाई न खाय सुजाक चिनग और प्रमेह जाय

बंबूर

बबूल की अंतर छाल पानी में डालकर पीछे उसी पानी से कुरला करे तो मुह के फोड़ा और दांतों का लोहू गिरना बंद होकर आराम हो ॥

खेर

खेन खासी कफ और वायगोला की दवा

खेरसार मासे ९ पीसकर अदरक के रस में या अडूसा के पत्ता के रस में या नागरबेल के पान के रस में मटर प्रमाण गोली बांधे एक

या दो गोली सुवह और शाम को खाय तो खेन खांसी कफ को आराम हो अथवा खैर का घोटा पुराने पेड़ का हो उस को लाकर तोले २ हलदी जावदी माशे ६ मिलाकर दोनों को पीसकर लाहोरी नमक माशे ६ मिलाके पावभर छाछ में मिलाकर थोड़ा गरम कर के पीवै तो वायगोला का दरद जाय दिन ३ पीवै तेल न खाय।

अग्नी मंद कफ खेन और मुख दुर्गंध की दवा

नागरवेल के पान की या कपूरी पान की बीड़ी लगानी चाहिये उस में छोटी इलायची दालचीनी जावित्री और सुपारी सेवरधनी ले

पहिले करथा चूना लगाय और सब मसाला धर के खाय तो अग्नी मंद मुख की दुर्गंधता कफ खेन आदि रोग जाय पान में बहुत गुण हैं इस को कितनी ही दवाइयों में बरताव करे हैं तथा पान मे सिंगरफ घोटे और उसे पान
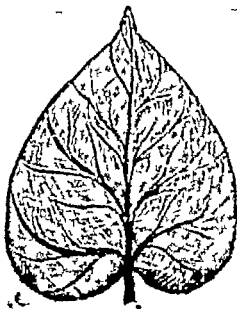
की लुगदी में धर के इसी तरह पुट तीन सौ देवै तो मात्रा सिद्धि हो नाग को मारै कर्म सिद्धि हो परन्तु आंच सेर भर बकरी की मेंगनी की देवै तो अर्द्धांग भी जलै।

गठिया बादी या सीत बादी की दवा

नेगड़ के पान या बीज पावभर पानी डेढ़ सेर इन दोनों को हांडी में डालै पीछे गेहूं के आटे की बाटी कर के डालै सीजने के बाद निकालै सेककर गुड़ घी मिलाके खाय तो बादी जाय अथवा नेगड़ के बीज तोले २० पीसकर घी में सैक के पीछे हलदी तोले ४ पीस के घी में सेके फिर आटा गेहूं का १ सेर घी में सेक सब दवाई और गुड १ सेर मिलाके लड्डू बांध ११ या १५ दिन खाय तो बादी जाय

मूत्र में भिजोवे प्रभात घोट के पीवे आराम हो दिन ५ तथा ७ पीवे परहेज न बिगाडे अजवा-यन का चूरन बनता है और अजवायन स्त्रियों को जापे में दी जाती है अजवायन का अर्क और तेल भी निकलता है अजवायन बहुत गुणकारी है मालिस और खाने में बहुत फा-यदेमद है बादीवाले को खाट पे बिठाकर अजवायन की धूनी दे तो सीत बादी जाय आराम हो।

धात पुष्ट की दवा

घुइयां (अरवी) साग की दो सेर उबाल के छिलका दूरकर टं पीछे मोटी सुई अथवा कांटे से गोदकर घी में सेके जब बदामी रंग होजाय तब नीचे उतारले फिर ३ सेर मिसरी

अरई

की चाशनी पेठे की सी करै उस में घी की सिकी हुई घुइया डाले इलायची केसर धौरी मूसरी तोला २ विदारीकद तोले २ चोवचीनी तोले २ पीस के उस में डाले और सहत आध

मूत्र में भिजोवे प्रभात घोट के पीवे आरामहो दिन ५ तथा ७ पीवे परहेज न बिगाड़े अजवायन का चूरन बनता है और अजवायन स्त्रियों को जापे में दी जाती है अजवायन का अर्क और तेल भी निकलता है अजवायन बहुत गुणकारी है मालिस और खाने में बहुत फायदेमद है वादीवाले को खाट पै बिठाकर अजवायन की धूनी दे तो सीत वादी जाय आराम हो ।

धात पुष्ट की दवा

घुइया (अरवी) साग की दो सेर उवाल के छिलका दूरकर दे पीछे मोटी सुई अथवा कांटे से गोदकर घी मे सेके जब बदामी रग होजाय तब नीचे उतारले फिर ३ सेर मिसरी

अरई
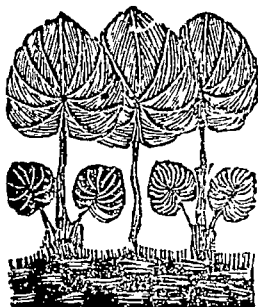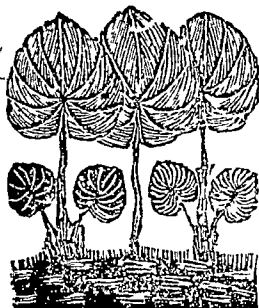
की चाशनी पेठे की सी करे उस में घी की सिकी हुई घुइया डाले इलायची केसर धौरी मूसरी तोला २ विदारीकद तोले २ चोबचीनी तोले २ पीस के उस में डाले और सहत आध

सेर सबका मिलाके बर्तन में भर के १५ दिन धरा रहने दे पीछे उसको खाय तो नल सग्रहनी भस्म रोग या धात जाती होय तो बंद हो तेल खटाई न खाय परहेज राखे घुइयांका साग बहुत उत्तम बनता है।

जावदी हलदी

वादी की दवा

हलदी जावदी के टुकड़े कर के दूध में भि-जोवे दूसरे दिन घी में सेक पीछे खूब महीन पीस के एक सेर गुड़ पावभर हलदी में मि-लावे और १८ दिन खाय घृत खाय चाहे जैसी वादी हो उस को भी आराम होवे यदि घोट की पीड़ा होय तो आराम हो अथवा हलदी जावदी तोले १० दूध गाय का ढाई सेर कढ़ाई में औटावे उस में हलदी डाल खोवा करै और उस में खाड़ मिसरी डाल ल-ड्डू बाध के ९ या ११ दिन खाय तो वादी जाय, परहेज राखे नित दाल साग में खाते हैं

चोट और सूजन की दवा

चोट की मार दूखती हो या सूजन हो या

जावदी हलदी

कोई गाठ हो तो दारुहलदी सज्जी कारी-
जीरी तिलकंटू ये सब पीस गरम कर के ल-
गावै तो आराम हो दारुहलदी घोडों के म-
सालेमें ली जातीहै और २ रोगों मेंभी घरती है

यदि दम की बीमारी हो तो दारुहलदी तोले ४ भूकटेरी के बीज तोले ४ आक के फूल की भिंगी तोले २ नमक पांचों तोले ५ इन सब को मिलाके पीसकर कुल्हड़े में भर के अग्नी में धरे तो भस्म होय इसको मासा १ गरम पानी में डाल पीवै तो खांसी दम खेन जाय परहेज न बिगाड़े आराम हो॥

माता के व्रण फोड़ा और करणमूल की दवा

माता के पके हुवे व्रणपर नादणवन का पान पीसकर लगावै तो आराम हो अथवा दूध आ-वा हलदी सोंठ कारीजीरी तिलकंटू और अ-रंड की भिंगी पीसकर कर्णमूल या फोड़ा पै लगावै तो आराम हो कर्णमूल कान के पीछे

दूर्वा

एक फोड़ा होता है यदि कंठमाला के लगावे तो आराम हो दूब मंगलीक वस्तु है देव पूजन के काम आती है ।

खूनी बवासीर के दस्तों की दवा

सफेद दूब मासे ६ चन्दन सफेद घिसा

हुवा मासे तीन चावल के धोवन का पानी

सफेद दूब
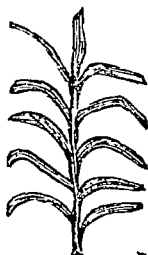
तोले ९ मिसरी तोला १ सामिल पीसके चावल के पानी में मिला पीवै तो दस्त बद हों यदि सुजाक हो तो दूब मासे ६ इलायची रत्ती ४ मिरच कारी नग सात जेठी मद मासे

६ ये सब घोट के पीवे तो आराम हो। दिन सात तथा नौ पीवे परहेज न विगाडे खटाई तेल वेंगन उडद की दाल गुड आदि वस्तु न खाय ॥

हींगाष्टक चूरण

सोंठ मिरच पीपल अजमोद काला जीरा सफेद जीरा सेंधा नमक इन सब को बराबर लेकर और आठ मासे हींग बहुत उम्दा घी में भूनकर इन सब चीजों में मिला चूरण ब-नावे और भोजन के समय ६ मासे चूरण प-हिले पांच ग्रासमें खाय तो जठराग्नि को प्र-बल करे बायगोला को नाश करे और बात व्याधि को फायदा करे इस चूरण में बहुत गुण हैं ।

खासी की दवा मिरचादि गुटका

मिर्च तोळे चार पीपल तोळे चार जवाखार तोले दो इन को पीसकर गुड तोले ३२ में मिलाके गोळी टक टक के प्रमाण बाधे और मुख में राखे तो पाच प्रकार की खासी जाय आराम हो।

सतोपलादि चूर्ण

मिसरी तोले सोलह वसलोचन तोले नौ पीपर तोले ४ छोटी इलायची तोळे दो तज तोले १ इन सब को पीसकर चूरण बनावे और मासे ६ के उनमान सहत में सेवन करे तो खांसी स्वास क्षयी को दूर करे हाथ पाव की जलन मन्दाग्नी जीभ का सूखना हाडों

का दर्द अरुचि ज्वर ऊर्ध्वगति रुधिर विकार पित्त आदि के रोग जाय ।

हिंगु पंचक चूरण

सोंठ तोला एक सांचर नोंन तोला एक अनारदाना तोला एक अमलवेत तोला एक हींग एक हिस्सा मिलाकर पीस के चूर्ण ब-नावे मासे तीन के उनमान खाय तो उदर रोग जाय ।

हिंगुत्रयोविंशती चूरण

हींग मासे ९ सेंधा नोंन चव्य सोंचर नोंन विडनोन अमलवेत सज्जीखार जवाखार सोंठ मिरच पीपर अनारदाना तंतरीक पीपरामूल अरनी कचूर हाउबेर असगंध पाढ़ हरड सफेद

जीरा पोहकरमूल बच धनिया ये सब बराबर ले कूट पीसकर चूर्ण बनावे पीछे बिजोरे के रसकी भावना दे और मासे ४ या ६ के अनुमान गरम पानी में खाय तो बायगोला सूल गुदा के रोग संग्रहणी आदि मिटे।

दाणिमाष्टक चूर्ण

अनारदाना तोले ४ पीपल तोले २ पीपरामूल तोले २ वंसलोचन तोले ४ अजवायन ताले २ मिरच तोले २ धनिया तोले २ जीरा तोला २ तज तोला १ तेजपात तोला १ दालचीनी तोला १ इलायची तोला १ नागकेसर तोला १ ये सब पीस के चूर्ण मासे ६ के अदाज खाय तो अतीसार क्षयी गोला संग्रहणी

गल रोग मन्दाग्नि पीनस खांसी वगैरा को आराम होय ।

रुचिकर अमृत प्रभागुटिका

मिरच पीपलामूल लौंग हरड अजवायन तंतरीक अनारदाना सेंधा नोंन कालानोंन कांच का नोंन पीपर जवाखार चीता दोनों जीरे सोंठ धनियां इलायची वडी आंवला इन सब दवाइयों को बिजोरे के रस में घोटके पुट पांच देकर झारी बेर के अनुमान गोली बांध छाया में सुखावे विचार से खाय तो अजीर्ण प्रदीप करै अमृत के तुल्य है ।

उन्मीलन गुटिका

हरड़ तोले ४ सोंठ तोले ४ इन दोनों को

पीसकर गुड़ तोले २४ में मिलाकर गोली ब-
नाय के खाय तो बुद्धि बढै शरीर पुष्ट होय
वात कफादि रोग को निर्मूल करै मल मूत्र
को शुद्ध करै।

बंध्या के पुत्र होने की दवा

पारस पीपर के बीज नग २७ गजकेशर मासे
९ पीपर की जटा मासे ९ इन सब दवाइयों
को मिला ३ भाग करै ऋतुदान ले उस दिन
से ३ दिन तक गाय के दूध में डाल के पीवै
अथवा पारस बीज जीरा दोनो को सफेद स-
रफोका के साथ पीस जल के साथ पीवै तो
गर्भ रहै अथवा बंध्या स्त्री पलास का एक पत्ता
पीस दूध में डाल पीवै तो गर्भ रहे अवश्य
पुत्र होय अथवा कैथ के गोंद को पीस दूध में

सब चूरणों में डाला जाता है साग दाल में अकसर कर के नमक और जीरा पीसकर मंजन करे तो बादी गरमी दांतों की मिटे ।

सोंफ
(वरियारी)

आमवात आतशक और वमन की दवा

सोंफ सोंठ हरड़ और मिसरी इनका सेवन करै तो आम वात मिटै सोंफ और पोदीना का अर्क पीने से वमन और दस्त को आराम होवै है सोंफ का निरने ही सेवन करै तो आतशक और मुख के छाले मिटते हैं सोंफ का तेल भी निकलता है और बहुत गुणकारी है सोंफ चूरन और ठंडाई और अचार में भी घरती जाती है इस का मिजाज तर गरम है सोंफ का पाक भी बनजाता है पाक का सेवन करने से आतशक गरमी बवासीर और आम वात तथा मुख का फोडा भी मिटता है इस को बरियारी भी बोलते हैं।

अथ जवादी क्षार के गुण

जवाखार मासे ऊढ़ जल के साथ सेवन करने से उदर विकार और प्रमेह जाय स्वांस कास जाय प्रमेह को तो यह जड से खो देता है बहुत गुणकारी है ।

स्तम्भन की दवा

नागकेसर तोले पाच की पुडिया नग ग्यारह पीसकर बना लेवे और एक पुडिया गऊ के घी में मिलाके खाय तो वीर्य्य स्तम्भन होय और नपुसकता भी होय तो उस को आराम हो ।

मुखके फोड़ा और दुर्गंध की दवा

पीपर जीरा कूट और इन्द्रजो इन के चवाने

से मुख पाक, मुख व्रण, मुख का चिकटापन और मुख की दुर्गंध ये सब रोग दूर हों पर-हेज न विगाड़े तेल खटाई मिरच नोंन गुड़ बेंगन न खाय ॥

बास के गुण

जिस के उदरमें चोट या वजन से रुधिर भर गया हो और दाह होता हो तो बांस की छाल उबाल के काढ़ा कर के सहत मिलाकर पीवे तो शीघ्र ही दाद मिटे ।

पीनस स्वास कांस और गर्मी की दवा

हरड़ तोले ३ बहेड़ा तोले ३ आवले तोले ३ पीपर तोले साढ़े चार इन सब को पीस तीन मासे की पुड़िया बनावे सहत के साथ

सेवन करै तो ऊपर लिखे भये रोग मिटैं ख-
टाई तेल गुड बेंगन उडद की दाल न खाय।

वात गुल्मरोग की दवा

आवले पके लेकर छ' गुणे रस में घृत पका
के सक्कर और सेंधव युक्त कर के वात गुल्म
वाले को सेवन करावे तो फौरन ही आराम हो

भस्म रोग की दवा १

ओंगे के बीजों को पीसकर दूध में खीर कर
के खाय तो महा घोर भस्म रोग मिटै।

अमृताद्य गुग्गल

इलायची वायबिडंग कुडा की छाल बहेड़ा
हरड आवले और गुग्गल इन को क्रम से लिखे
माफिक एक एक भाग जियादे लेवे जैसे व-

हेड़ा पाच भाग हरड ६ भाग आवले सात भाग गुग्गुल आठ भाग इन सब को चूरण कर के सहत के सग चाटने से प्रमेह की पीड़ा मेदे की स्थूलता और भगंदर का रोग दूरहो

नीवाद्यय चूर्ण

नीम के पत्ते दश भाग त्रिफला तीन, भाग त्रिकुटा तीन भाग अजवायन पांच भाग तीनों नमक तीन भाग जवाखार दो भाग इन सब को पीसकर चूर्ण करे नित्य प्रात.काल तीन मासे सेवन करे तो एकाहिक, द्वाहिक, तत्रा-हिक, चातुर्थक, सतत, धातु गत और त्रिदो-षज्वर का नाश हो ।

महा अग्नि मुख चूर्ण

हींग एक भाग, वच दो भाग, पीपर तीन

भाग, सोंठ ४ भाग, अजवायन ५ भाग, हरड ६ भाग, चित्रक ७ भाग, कूट ८ भाग इन सब का चूरण कर सेवन करें तो वात व्याधि नाश हो। अथवा इस चूर्ण को लहने के साथ या दही के साथ अथवा दही के पानी के साथ या मद्य तथा (मदिरा) के साथ या गरम पानी के साथ सेवन करें तो यह उदावर्त अजीर्ण पीपिहा उदर का रोग काश स्वास क्षयी अर्श शूल और गुल्म रोग का नाश हो जठराग्नि की वृद्धि हो इस का नाम अग्नि मुख है यह प्रयोग मिथ्या नहीं जाता।

महाभास्कर लवण

समुद्री निमक आठ तोले सोंचर निमक पाच तोले विडग निमक सेंधा निमक धनिआं

पीपर पीपल पीपरामूल स्याह जीरा तमाल-
पत्र नागकेसर तालीसपत्र अमलवेत हर एक
चीज दो २ तोले ले मिरच सफेद जीरा सोंठ
प्रत्येक एक २ तोला खट्टे दाडिम के बीज
चार तोले तज छः मासे इलायची आधा तोला
इन सब को पीसकर चूरण तैय्यार करे उस
का नाम महाभास्कर लवण चूरण कहे मात्रा
इसकी पाव तोला दही के पानी के साथ या
मठाके साथ अथवा मदिरा के साथ अथवा
किसी और वस्तु के साथ सेवन करे तो म-
दाग्नि का नाश होवे तथा दीपन पाचन वात
कफ जन्यकु गुल्म फीया उदर क्षय सग्रहणी
कुष्ट विवध भगंदर साफ सूल स्वास कास
आमदोष और उदर रोगों का नाश करता है

डाल के पीवे तो जैसी अग्नी व्रण को जला देवे है वैसे ही यह काढ़ा ऊपर लिखे रोगों को जला देता है ।

वीर्य्य स्तम्भन की दवा

चोवचीनी धौरी मूसरी गोखरू नागकेसर तालमखाने सिताधर कोंच के बीज गंगेरन की जड़ खरैंटी इन सब को पीस चूर्ण कर दूध के संग पीवे रात्रि के समय दिन तेरह या पन्द्रह पीवे तो वीरज का थमन हो ।

क्षयी की दवा

नागरमोथा पीपल और दाख और भटकटैया का फल इन सब का चूरण कर घी और सहतके साथ चाटेतो क्षयी रोगका नाशहो

बातज अश्मरी की दवा

आत्रेय कहते हैं कि वरुण की अन्तर की छाल सोंठ और गोखरू के काढ़े में जवाखार और गुड़ मिलाय कर पीवै तो बहुत दिनों का तथा पुराना बातज अश्मरी का नाश होवै है।

जल प्रद की दवा

पभार की जड़ को चावल के धोवन से पीसकर प्रात काल पीवै तो जलप्रद जाय।

घाव और फोड़ों की दवा

कालाजीरा ब्रह्मडडी मिरच पीपल इन का लेप करै तो फोड़ा अच्छे होवें अथवा चावल के पानी के साथ पीवै तो आराम हो।

वंध्या की दवा

पुष्य नक्षत्र में लक्ष्मणा बूंटी का पूजन कर के उखाड़े और उस की जड़ को लेकर घी गुवार के रस में पीसकर दूध के साथ पीवे तो वंध्या स्त्री अवश्य गर्भ धारन करे।

वंध्या की दूसरी दवा

पीरे फूल की कट सरैया धाय के फूल बड़ का अकुर नीला कमल इन को पीसकर कारी गऊ के दूध में मिलाकर पीवे तो स्त्री सत्य गर्भवती होवे परन्तु पारवती और शिवजी का पूजन करे तथा सतान गोपाल सहस्रनाम का पाठ करावे तो सत्य सही हो ।

वंध्या की तीसरी दवा

शिवलिंगी के बीज माशे तीन पीपल की

जटा मासे तीन गजकेशर मासे डेढ़ पीसकर ऋतुदान लेके स्त्री दूध के साथ ऊपर लिखी हुई दवा पीवे और शिवजी क स्थान में घी का दीपक वारै नित्य इसी भाति सात महीने करै तो अवश्य पुत्र हो ।

राज गुटिका चूर्ण

सोंठ तोले नौ गंधक तोले चार सेंधा नमक तोले चार इन को दो पहर नीवू के रस मे घोटे पीछे झारीबेर के अनुमान गोली बनावै यह दवा अजीर्ण और बिशूचिका को भी दूर करती है ।

वात पित्त ज्वर की दवा

लाल चदन पदमाक धनियां गिलोय और

नीम की छाल इन पाचों दवाइयों को बराबर ले काढ़ाकर पीवे तो वात पित्त ज्वर दाह तृषा खासी और मन्दाग्नी का नाश हो।

ज्वर नाशक वृक्ष

अगस्त के पत्तों को मलकर उस का रस निकाले और उस रस को सूंघे तो दो चार बार के सूघने ही से तिजारी और चौथैया ज्वर जाय।

खांसी की दवा

हरड़ बहेड़ा आवला गिलोय चित्रक रास्ना बायबिडग सोंठ मिरच पीपल इन सब दवाइयों को बराबर लेकर पीस लेवे फिर सब दवाइयों की बराबर खाड़ मिलाकर तीन मासे

नित्य प्रति खाय तो सब प्रकार की खांसी मिटे

नेत्र पीड़ा की दवा

त्रिफला पीसकर तीन मासे नित्त घी अथवा सहत के साथ सेवन करे तो नेत्र की हर तरह की पीड़ा जाय गुड़ तेल खटाई उडद बेंगन नहीं खाय स्त्री से परहेज राखे ।

वीर्य्य वर्द्धक दवा

मुलहटी को पीस चूरण कर के घृत में भून सहत के साथ चाटै और ऊपर से सफेद गऊ का घृत पीवे तो अति पराक्रम प्राप्ति हो ।

सर्वोपर पुष्टि कारक दवा

खाड़ घृत दूध इन तीनों चीजों को जो मनुष्यादिक वगैरह सेवन करे तो इसकी बरा-

पर कोई भी उत्तम दवा नहीं है गऊ का ताजा घी खाड मुधी हुई और जो गऊ जंगल में चरने को जाती हो उस का दूध और घी खाय यह दवा हर एक सज्जनों की अनुभव करी हुई और सर्वोपर हैं ।

शुक्र स्तम्भन की दवा

सफेद सरफोका की जड़ लाकर उस को पीसकर उस में सहत मिलाके नाभि पे लेप करै तो वीर्य्य स्तम्भन हो अथवा सहत मे कमल का बीज मिलाकर नाभि पर लेप करे तो स्तम्भन हो अथवा इन्द्रायन की जड को लेकर उन्मत्त चकोर के मूत्र की सात बार भावना देकर नाभि के नीचे लेप करै तो शुक्र स्तम्भन

हो अथवा पुष्य नक्षत्र मे श्वेत कर्ण की जड लाके कमर में बांधे तो वीर्य्य पात न होवै।

सुंठादि चूर्ण

सोंठ तोले दो काला निमक मासे ६ पौहकरमूल तोला एक हींग मासा एक इन सब का चूरण कर के गरम जल के साथ लेवै तो हृदय रोग कोख पीठ पेट आदि का शूल तथा वादी और कफ का शूल तत्काल ही नष्ट होवै

काम विलास चूर्ण

नोमगिलोय का सत्त तोला एक अवरक मासे तीन सार मासे डेढ छोटी इलायची मासे नौ मिसरी तोला डेढ़ पीपल मासे नौ इन सब का चूरण कर डेढ़ मासे सहत के

साथ चाटे तो नपुंसक भी पूर्ण पुरुषार्थवान हो और पुरुषार्थी का तो कहना ही क्या है ।

द्वितीय काम विलास चूर्ण

गोखरू तालमखाने सितावर कोंच के बीज गगेरन की छाल खरेंटी इन सबन को बराबर ले सब को पीसकर पन्द्रह या इक्कीस दिन दूध के साथ रात्रि के समय सेवन करे तो वीर्य्य बढ़े यह चूरण उस मनुष्य को सेवन करना चाहिये जिस के घर में स्त्री नव यौवना और स्वरूपवती भी होय ।

लवगादि चूर्ण

लौंग कंकोल खस सफेद चन्दन कमल नीला तगर काला जीरा छोटी इलायची

काला अगर नागकेसर पीपल सोंठ बालछड़ नेत्रवाला कपूर जायफल बंसलोचन इन सब दवाइयों को बराबर ले पीसकर रख ले पीछे सब दवाइयों के बराबर मिश्री मिलाकर सेवन करै यह चूर्ण इन्द्रियों को पुष्ट करै अग्नी को प्रदीप्त करै वृष्य है त्रिदोष ववासीर को को हरै अफरा स्वास कास गलग्रह खांसी हिचकी अरुचि यक्ष्मा पीनस संग्रहणी रुधिर विकार क्षयी प्रमेह इन सब का नाश करता है

सर्व ज्वर नाशक चूर्ण

चित्रक सेंधा निमक हरड पीपल और आंवला इन चीजों का चूरण रुचिदायक है और सर्व ज्वरों का नाश करता है यह चूरण वृत रत्नावली ग्रन्थ से निकालकर लिखा गया है

मिरचादि गुटिका

काली मिरच तोले चार पीपल तोले चार जवाखार तोले दो अनारदाना तोले नौ इन को पीसकर बत्तीस तोले पुराना गुड मिलाकर एक टक प्रमाण गोली मुख में डालकर उस का अरक चूसै तो पाच प्रकार की खांसी जाय

त्रिफलादि गुटिका

त्रिफला तोले तीन ककडी के बीज तोले तीन सेंधा निमक तोले तीन सिलाजीत तोले तीन इन सब को पीसकर बहुमुत्रवाले को दे तो आराम हो यह गुटिका अति उत्तम है ॥

काम विलास चूर्ण

अकरकरा सोंट ककोल केशर मिरच पीपल

जायफल लोंग चन्दन प्रत्येक एक एक तोले अफीम आधा तोला इन सब को पीसकर आधे मासे दवाई सहत में मिलाकर चाटे तो स्तंभन होय कामी पुरुषों को अति आनन्दकारी है रात्रि के समय खाय इस के ऊपर दूध और घी खाय ॥

दवा

इमली और गुड के सरबत में तज और काली मिरच का चूरण मिलाकर मुख में धारण करने से अभुक्त छंद का रोग अरोचक नाश होता है ।

सालम पाक

सालम तोले चार सफेद मूसरी तोले चार

विदारीकंद तोले चार सितावर तोले चार गो-
खरू तोले चार चित्रक तोले दो नागकेसर
तोले दो काळी मूसरी तोले दो वलबीज तोले
दो तुखमबलगा तोले दो बाय विडंग मासे
नौ तज तोले एक सोंठ तोले चार काली मि-
रच तोले दो दालचीनी मासे ६ लोंग मासे
६ गोरखमुडी मासे ६ नरघुडी मासे ६ गुद-
धावडी तोले नौ अकरप मासे ६ नागकेसर
मासे ६ धग मासे ६ मूगे की भस्म मासे ६
इन को पीसकर खोवा मिसरी मैदा और घी
आदि का किवाम तैय्यार कर के उसमें पिसी
हुई जो कि ऊपर लिखी हैं उन सब दवाइयों
को डालकर ऊपर से केसर इलायची गिरी
आदि मेवा डाल पाक या लड्डू तैयार करे

पीछे रत्न से खाय जब तक खाय तब तक स्त्री के पास न जाय तो ताकत आवै और वीर्य्य बढ़े यह पाक अति उत्तम और सही है

काश की दवा

मैनसिल को पानी में पीसकर बेर के पत्तों पर लेप कर के उस पत्ते का धूवां पीकर ऊपर से दूध पीवै तो महा काश का नाश हो।

अंडकोष की दवा

अदरक के रस में सहत मिलाकर पीवै तो अडकोशों की बादी जाय तथा स्वास कास अरुचि और सेरकमा अर्थात् (जुकाम) दूरहोवे

अथ सुर्य्यावर्त की दवा

गोरखमुंडी के स्वरस को कुछ गरम करके

काली मिरचका चूर्ण मिलायके पीवे तो सूर्य्यावर्त अर्धाव भेदक आधा शीशी दूर होवे।

विषमज्वर की दवा

नागरमोथा कटेरी गिलोय सोंठ आवले इन सब को बराबर ले काढ़ा कर सहत पीपर का चूरण डाल के पीवे तो विषमज्वर का नाश होवे॥

धन्य मद की दवा

पेठे के रस में गुड़ मिलायकर सेवन करे तो दुष्ट कोदों धान्य से उत्पन्न हुआ मद दूर होवे।

मूसली कंद चूर्ण

धोरी मूसरी गिलोयसत्त कोंच के बीज

गोखरू विदारीकंद (सॅभर की जड़ को बि-दारीकद कहते हैं) मिसरी आंवले इन सातों दवाइयों का चूरण कर गऊ के दूध अथवा घी के साथ खाय तो धात की वृद्धि होय और काम शक्ति बढ़े ॥

बिषमज्वर की दवा

तुलसी के पत्तों का रस अथवा द्रोणपुष्पी को गोमा रूखडी के पत्तों के रस में काली मिरच का चूरण डाल के पीवे तो विषम ज्वर जाय ।

रक्तातिसार की दवा

जामुन आम आंवला इन के पत्तों का रस निकाल कर सहत घी दूध मिलाके पीवे तो

घोर रक्तातीसार को आराम करै ।

सर्व प्रकार के प्रमेह की दवा

गिलोय के स्वरस में सहत मिलाय के पीवै तो सर्व प्रकार का प्रमेह दूर होय अथवा आंवले के स्वरस में हलदी का चूरण और सहत मिलाकर पीवै तो सर्व प्रकार के प्रमेह नष्टहोंय

सितावरी चूर्ण

सितावर गोखरू कौंच के बीज गंगेरन की छाल कही की छाल तालमखाने इन छः औषधों का चूरण कर रात्रि के समय पीवै तो बहुत सी स्त्रियों से भी तृप्ति न हो ।

व्याधिआदि गुटिका ऊर्ध्ववात की दवा

कटेरी का जीरा और आंवला इन तीनों

औषधों का चूरण कर सहत मे मिलाके चाटै तो ऊर्ध्ववायु महा स्वास तमक स्वास ये सब रोग तत्काल नष्ट हों।

मिरचादि गुटिका

काली मिरच और पीपल तोले दो भर जवाखार आधा तोला अनार की छाल तोले दो इन चारों औषधों को चूरण कर आठ तोले गुड़ मिलाके चार मासे की गोली बनाकर मुख में राखे तो सम्पूर्ण जाति का स्वास कास और खासी दूर होवे।

मुख शोख की दवा

आंवला नग १ कमल नग २ कूट की खील और बड़की कोंपल इन पांचों औषधों को पी-

सकर सहत में मिलाय के गोली बनावे और एक गोली मुख में राखे तो अत्यन्त प्यास का लगना मुख का घोर शोख नाश होवै।

पारा भस्म करने की दवा

नागरवेल के पान के रस में पारा खरल करे कंकोड़ा के कद में पारा रखकर उसी के टुकड़ा से बद करे संध्दी मिलाय के कपड मिट्टी देकर सुखावे फिर उस को सरवला संपुट दे कपड़ मिट्टी सुखाकर अरणे उपलों में धर हलकी मदी आंच दे तो पारा भस्म हो सीतल हुवे पीछे निकाले फिर इस को कार्य में लावे सही।

इति

यन्त्र अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखके होम करे पीछे मारुति का पूजन करे जिस किसी को डाकिनी साकिनी भूत प्रेत लगा होवे उस के गले मे बांधे यह यन्त्र घंटा करण को है ।

अथ घंटा करण मन्त्र लिख्यते

ॐ घंटा कर्णो महावीर सर्व व्याधि विनाशक वीर फोट भयं प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल यंत्रत्व तिष्ट से देव लिखितो क्षर पंक्ति भी रोगास्तत्र प्रसंती वात पित्त कफाद्या ।

तत्रराज भयं नास्ति याती कर्णो जपात्क्षर शाकिनी भूत वेताल राक्षस्या प्रभवंतीना न काले मरण तस्यन च सर्पेण डस्यते अग्नी चोर भय नास्ति ह्रीं ॐ घंटा कर्णो नमोऽस्तुते ॐ ठ ठः ठः फट स्वा. ।

घंटा कर्ण साधन शुभ विधि

महूरत पुष्पार्क स्वातार्क चन्द्र बलवान श्री महावीर की मूर्ति के आगे जप करे और घृत को दीपक बारे प्रतिमा की पूजाकर नैवेद्य धूप पुष्प चढ़ाय स्वच्छ मत्र को जप १२००० बारह हजार करे सिद्धि होय पीछे जब काम पड़े तो चलावे सर्व कार्य पर चलता है पानी को हाथ में लेकर मन्त्र पढ़ के छींटा देवे तो सर्प का विष उतरे भूत प्रेत ब्रह्मराक्षसादि वगैरह चोरों का भी भय दूर होजाय ।

इति साधारण प्रयोग

अथ द्वितीय प्रयोग

ओ३म् प्रणम्य गिरजा कान्त ऋधि सिद्धि प्र-

दायकं घंटा कर्णस्य कलपच सर्वारिष्ट निवा-
रण सदा प्रथम शुभ शुक्ल पक्ष शुभ तिथी
पञ्चमी दशमी पूर्णिमा इति वचनात शुभ तिथि
शुभ वार शुभ योग हस्तार्क पुष्य चन्द्र बल-
वान या दशमी दीतवार अथवा ग्रहण या
नवरात्रि या काली चौदस शुद्ध भूमि देख के
अथवा देवस्थान देखकर सिद्धि करे (ॐ ह्रीं
श्रीं भुम्यादि देवतायनमः) इदं मंत्र जपीत्वा
भूमि सुचिर्जाता (तदनन्तर धूप दीप अक्षत
कर्पूराभ्या सुधनीय) (ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं गंगा-
जलायनमः) यह मंत्र कहके स्नानकर लाल
सुरख वस्त्र धारण कर के यह मंत्र को जप
करे (ॐ ह्रीं क्लीं आनन्द देवायनमः) शुद्ध

क्रिया में रहे घटाकर्ण देव का ध्यान धरै पीछे मंत्र जपना सही ।

इति द्वितिय विधि समाप्तः ।

यंत्र अष्टगध में भोजपत्र के ऊपर दशमी दीतवार को लिखकर हाथ में अथवा सिखामें बांधे तो मनोकामना सिद्धि होय और स्त्री की

ॐ नमो अर्हताय स्वाहाः

ॐ ह्र नमो अर्हताय स्वाहाः

चिंतामणी यंत्रोय 'पदमावती कल्पोक्तया पूज्ययति स. मुक्ति वल्लभोभवति तस्य सर्व-वस्य यान्ति मध्ये ह्र अष्टदलेपुरो क्रीं श्री ग्रौं ह्रीं व्लं क्लिं ग्रु इति ओ३म् नमो अर्हतारो श्री ग्री क्लीं स्वाहा ।

मंत्र जाप

१२१

सिद्धि न संशय

ह्रीं　　　　　　श्रीं

ॐ महावीरसदेवायनमः ॐ नागभद्रायनमः

ह्रीं
देवदत्त

यन्त्री　　　　　　दनमः

यह यत्र यामिनी का है सो अष्टगंध से लिख मुख आगे होम करै पीछे भुजा या शिखा में बाधे जो कामना मन में विचारे सिद्धि होय स्त्री पास राखे तो पति वश में होय प्रत्येक कामना को सिद्धि करनेवाला यह यत्र है ग्रथकर्त्ता का आजमाया भया है उत्तम विधि से सिद्धि होय ॥

नीचे लिखा हुआ यंत्र हलदी और कोयला से धोवी की सिलापर लिखके नील का छीटा देय फिर आधी सिला जमीन में गाढ़ और आधी सिला जमीन के वाहर राखे और पाम की मार दे तो शत्रु मुख बंद होय सही अथवा

हरताल या कोयला से लिखकर अर्क पत्र पे गाड़े और जूता प्रहार करै तो दुष्ट मूत्र बंद होय।

क्लीं	१०	३००	३००	१००	नास्य
क्लीं	३००	३००	१००	३००	नास्यमुख
क्लीं	३००	३००	३००	३००	नासय चन्द
क्लीं	३००	३००	३००	३००	नासय मुखचन्द

यन्त्र स्यालरी झाड़ बाधने का

यह यन्त्र हरताल अष्टगंध से लिख खेत में गाड़े तो स्यार खेत में न लगे।
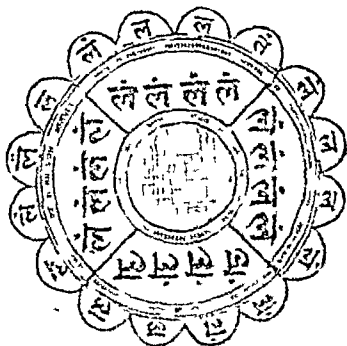
ॐ	ह्रीं	श्री
क्लीं	ह	नु
म	ताय	नम

हरताल या कोयला से लिखकर अर्क पत्र पे गाढ़े और जूता प्रहार करे तो दुष्ट मुख बद होय ।

क्लीं	१०	३००	३००	१००	नास्य
क्लीं	३००	३००	१००	३००	नास्यमुख
क्लीं	३००	३००	३००	३००	नासय चन्द
क्लीं	३००	३००	३००	३००	नासय मुखचन्द

यन्त्र स्यालरी झाड़ बाधने का

यह यत्र हरताल अष्टगंध से लिख खेत मे गाढ़े तो स्यार खेत में न लगै।

ॐ	ह्रीं	श्री
क्लीं	ह	नु
म	ताय	नम

यह यन्त्र लिखकर मेलि की बाधा हो उस के भोजपत्र अथवा कागज पर लिखकर बाधे आराम होवे यदि बालक के बांधे तो नजर न लगे ग्रंथकर्त्ता का अजमाया भया है ।

इति श्री बूटी प्रचार नाम ग्रन्थ
श्रीयुत महंत सुखरामदास
रतलाम निवासी कृत

सम्पूर्ण शुभम्

होमियों पैथिक चिकित्सा तत्व

इस समय डाक्टरी का प्रकार अधिक हो रहा है विशेष कर ' होमियोपैथिक , औष- धियों का प्रयोग तो रोग निवारण में जादूही का असर करता है इसी लिये हमने उपरोक्त ग्रन्थ बड़े परिश्रमसे तयारकरवायाहै इस पु- स्तक में रोगों की पहिचान तथा लक्षण थर्मा- मेटर आदि डाक्टरी यन्त्राका प्रयोग विधि, होमियों पैथिक औषधियों के नाम गुण मात्रा तथा प्रतिलोग यानी यह कि अमुक वस्तु या औषधि अमुक औषधि के गुणको नाश कर देता है औषधि देनेका समय दवा रखने का स्थान औषधियों सल्यूशन तथा डेल्यूट करने की विधि पथ्यापथ्य सब रोगों की चिकित्सा

तथा और भी उपयोगी और आवश्यक विषयों का विचार और वर्णन भली भाति किया गया है सच तो यह है कि ग्रथकार ने सागर को गागर में भरने का उदाहरण चरितार्थ कर दिखाया है इस पुस्तक के पास रखने से होमियोपैथिक इलाज में बहुत कुछ अभ्यास हो सक्ता है तथा बार २ डाक्टरो की खुशामद करने की आवश्यकता नहीं रहती वैद्यों तथा डाक्टरों द्वारा प्रशंसित यह छोटासा ग्रंथ अवश्य देखने योग्य है मूल्य सुलभ ॥) आना मात्र है डाक व्यय प्रथक।

पता-श्यामलाल अग्रवाल

श्यामकाशी प्रेस मथुरा